भोजपुरी खातिर समर्पित पत्रिका

भोजपुरी जिंदगी

त्रैमासिकी

RNI.- DELBHO-00009/29/1/2010-TC

वर्ष : 1] अक्टूबर–दिसम्बर 2010 [अंक : 1

अंक में

प्रधान संपादक के कलम से 2
संपादकीय के बहाने 3

आलेख

इग्नू में भोजपुरी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति का अध्ययन 5
बेसरमी से लाभ 8
समीक्षक बन गइनी 9
मुहल्ला के अधकट्टी 12
पड़ोसी 13
ये दिल माँगे मोर 14
ई सम्बंधी लोग 19
बेकारी से लाभ 21
बाराती 23
मंजर सुलतान के कलम से 24
एक बहुचर्चित व्यक्तित्व 26
भोजपुरी में व्यंग के माहिर खिलाड़ी 27
गाँधी जी के चउथका बानर 29
चरन पादुका 30
हास्य व्यंग्य के रसायनिक अवतार 31
घुसपैठिया 34
नथुनियां पर गोली मारे 35

कविता

इतिहास 7
मनमौजी 10
उधार खाइल 10
बबुआ जी के सुनी बखान 10
आए जाए में बा 10
दोहे 11
ना आएब 11
सब का बस के बात बा का 15
मुनवा के महतारी 16
अपना खेत के पहरा करनी 16
आई हो दादा 17
इतराइल बा 17
सीखऽ 17
हे भगवान 17
लात, बात, बरसात 18
कइसे होखी बेड़ा पार 18
चम्चा बताईं 18
परिसान करत बानी रउआ 18
उहे सुन लऽ आगे जाई 20
बियाह मत करि हऽ 20
बन गइनी हम सउँसे फतूरी 21
दिल आपन प्रीत पराई 22
घट गइल बा 22
हास्य गज़ल 22
आपन दाल गलाईं 25
आपन कविता 25
दोहे 25
कौनो गारन्टी बा का 28
जे कहदेनी से कहदेनी 29
का करतीं 30
हास्य व्यंग्य कविता 34
बन गइनी हम सऊंसे फतूरी 35

साक्षात्कार

मिर्जा खोंच साहब से भोजपुरी जिंदगी के उप–सम्पादक की बातचीत 32

संपादक

संतोष कुमार

★

– सम्पर्क –

आर जैड एच/940, जानकी द्वारिका निवास
प्रथम तल, राजनगर–2
पालम कॉलोनी, नई दिल्ली–110077

मोबाइल॰ : 09868152874

Email : bhojpurijinigi@gmail.com

★

सहयोग राशि

25 रुपये (प्रति अंक)
सालाना : 100 रुपये

★ लेखन आ संपादक अवैतनिक
★ रचना में दिहल तथ्य आ विचार के जिम्मेवादी रचनाकार के बा पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे।
★ भोजपुरी जिंदगी आ भोजपुरी आन्दोलन के सदस्य, सहयोगी बने खातिर पत्रचार करीं।

प्रधान संपादक

डॉ॰ गोरख प्रसाद "मस्ताना"

ओइसे त भोजपुरी के गोदी में सब धरम आ जाति के लोग बसल बा। भले कहे ला उ सभे जनगणना में उर्दूमा अंगरेजी लिखवावे बाकिर साँच ई बा कि उ सभे अपना अपना अँगना में भोजपुरी ओढेले बिछावेलें। भोजपुरी भाषा भी ओह सभन के आपन बुझी के अपना करेजा से सटवले रहेली तबे नू कहल बा –

ना कवनो भेदभाव ना, कवनो लटकन
भाषा ई सबले सबूरी ह ऽ
भोजपुरी ह ऽ

एही भोजपुरी माई के गोद़ी में मुस्लिम परिवार से मिर्जा खोंच के अवाई भइल। बेतिया, प॰ चम्पारण, बिहार के नयाटोला महल्ला से एगो अइसन शायर के आगमन भइल जे उर्दू लिखत लिखत भोजपुरी के सेवा में लाग गइले। **"भोजपुरी माटी"** (कलकत्ता), होखे, का **"निर्भिक संदेश"** (जमशेदपुर), **"भोजपुरी जिनिगी"** (दिल्ली) होखे भा **"पूर्वांकुर"** में उहाँ के रचना छपे लागल। **"दी संडे इंडियन"** [भोजपुरी – दिल्ली] में उहाँ के व्यंग्य आलेख के जवन सराहना मिलल उ सबका ना मिलें। भोजपुरी के एगो करजा माने ले मिर्जा खोंच। ओकरा निवास ला सामाजिक ठोनच के

धकिया के उनकर जवन समर्पण बा उहे उनका के लमहर रचनाकार बना देला।

जहाँ ले मिर्जा खोंच के उर्दू साहित्य के बात बा देश क जेतना उर्दू के छोट बढ़ पत्रिका बाडी सन सब में उहाँ के छपल बानी आ एगो विशेष स्थानो बा। व्यंग्य आलेख का संगे ग़ज़ल आ हास्य–व्यंग्य के हज़ल लिखे में उहाँ के जोड नइखे। बाकिर भोजपुरी भाषा भी उनका लेखनी से निहाल बाड़ी।

भोजपुरी में सैंकड़न आलेख आ कविता ग़ज़ल विशेषकर व्यंग्य कविता लिख के मिर्जा खोंच भोजपुरी के जे सेवा करि रहल बाडे उ आवे वाला समय आ पीढी दूनू इयाद करी।

भोजपुरी के सेवा ओइसे त ऽ देश में अनेक मुस्लिम विद्वान लोग कर रहल बाडे, जवन सराहनीय आ नमनीय दूनू बा बाकिर ओही लोगन में जवन मिर्जा खोंच के समरपन बा। उ भोजपुरी भाषा के बदे उनका लगाव आ त्याग केसाफ साफ दरसन करावत बा। साम्प्रदायिक सद्भावना के एक भाषाई दूत के अपने ही लोग से उलाहना सुने के पडे ला। बाकिर जेह तरे सूरज जरत रहेले, आपन परमारथ ना छोड़स,पेड आपन 'फल' अपने ना खाय। नदी आपन जल अपने ना पीए। ओइसहीं मिर्जा खोंच धार्मिक झंझा के झारत भोजपुरी के सेवा में, विस्तार में, विकास में लागल बाडे आपन रचना आ विचार दूनू से। भोजपुरी कवि सम्मेलन के जान हउए मिर्जा खोंच। जब भोजपुरी में हास्य व्यंग्य सुना देले त श्रोता पेट दाबी के बइठ जाले। तीरे बुझी। जवन तेवर बा उनकरा भोजपुरी रचनन में ओकर सराहना समय करी। वर्तमान का ह भविष्य भी उनका के ना भुलाई। हमनी के एह अंक के उनका के समरपित करी के एगो भोजपुरी के सेवक के सराहना करत बानी। एह से उनका का होई भा ना ऽ होई ई त समय निर्णयकरी बाकिर हमनी के उनकर भोजपुरी सेवा के एगो करजा मानिलें। एही से ई अंक उनका के ही समर्पित बा। आशा बा रउआ सभे भी एह प्रयास के सराहब। आगू जी हमनी का अन्य भाषा भाषी भोजपुरी के सेवा में लागल बा आ लागल रही,ओकरे पर विशेष अंक निकालब। रउरा सभन के नेह छोह चाहीं। बनवले रही।

राउरे आपन
गोरख प्र॰ मस्ताना

संपादक

सम्पादकीय के बहाने

व्यंग्य रचना के माध्यम से मनुष्य में भीतर के बुराई, मुर्खतापन भ वेवकुफी के उपर प्रहार करके ओकर उपहास करल जाला। एह में कटाक्ष, ताना आ व्यंग्य वाणी के इस्तेमाल कइल जाला। भोजपुरी में एके साधारण तौर पर**'गाभी मारल', 'टोन कसल'** भा **'बोर करल'** भी कहल जाला।

अंग्रेजी में – **"It is a composition which lashes vices or folly with redicule it employs irony or sarcasm".**

व्यंग्य रचना मनई के बुराई या गलतियन के बड़ा मजगर अंदाज में उजागर करे के माध्यम बा।

व्यंग्य खाली कविते तकले सीमित नइखे बलुक गद्य/आलेख में भी प्रचुरता बा। भोजपुरी के शब्द अपने आप में एतना धनिक बा कि एही तरह लोग परेशान हो जाले कि आखिर फ़ला शब्द के कवन भाव में बोलल गइल इऽ आनि द्विअर्थी एकर विशेषता हो सकेला। **'गाभी'** – एतना सटीक होला आ उ निशाना पर लाग गइल भा बइठ गइल त सुनेवाला कबो कबो तिलमिला जाला। इ भोजपुरी शब्द के ताकत ह ऽ कि व्यंग्य में एकर मारक क्षमता दूसर भाषा के शब्दन से कही जादा घातक आ गंभीर बा।

व्यंग्य भोजपुरी साहित्य आ भाषा के एगो प्रमुख अंग रहल बा जवन कवनो व्यवस्था आनि सामाजिक, साहित्यिक, वैश्विक, राजनैतिक, आर्थिक आ धार्मिक के पसरल कुरीतियन, कुढंग, झूठ, फरेब, आदि के पाठक भा श्रोता के साम्मे लाये के काम करेला। उ सभ चीजन के उपहास भा खण्डन मजाकिया अंदाज में कह के करल जाला। व्यवस्था परिवर्तन के प्रत्यन भी करे ला। एकर लहजा बड़ा रोचक होला जेसे बात तऽ बड़ा आनंद पैदा करेला साथे साथेपाठकन भा श्रोता में घृणा आवेग आ जागृति भी पैदा करेला।

व्यंग्य हंसे भा मजाक ला नइखे। इ खाली प्रहसन ना हऽ। प्रसहन हमनी के खाली **'हँसा सकेला'** उलट एकरा व्यंग्य **'हंसी उडावेला'**। व्यंग्य से भी हंसी आवेला बाकिर व्यंग्य के **"हंसी पैदा कइल"** लक्ष्य ना हऽ। इ हँसी पैदा करके कवनो वेवकूफी वाला काम भा विसंगति, बेतुकापन या बेहुदापन के उजागर करके ओह के दूर करे के कोश्शि भी करेला। एह से हँसी के प्रयोग एगो खाली हिस्सा के तौर पर कइल जाला। व्यंग्य एक व्यक्ति आ समष्ठि पर हो सकेला। व्यंग्य मनुष्य में व्याप्त कुछेक बुराईन आ ओकर कुछ बेवकूफी के दूर करे में सहायक होला।

व्यंग्य के माध्यम से सुधार लाइल जाला। इ कवनो अदमी, समूह भा सामाजिक कुरीतियन के विरूद्ध कइल जाला। कुछ विद्वान मानेलन कि **'इ तनी हलुक साहित्य ह'** जेमे उपहास रह सकेला, गाली गलौज नाहिं। कोनो बुराई भा मुर्खता के बड़ी ताकत से उजागर कइल जाला –

भोजपुरी साहित्य में भी व्यंग्य के परम्परा हिन्दी साहित्य के सामान्तर चल रहल बा हिन्दी आ भोजपुरी के बोले वाला क्षेत्रन में व्यंग्य भोजपुरी में बहुते दमदार बा। भोजपुरी में व्यंग्य रचनाकरन में प्रमुख बाडे – स्वगीये रमेश्वर सिंह कश्यप उर्फ लोहा सिंह (1927), कुंजन जी, रोहतास; डॉ॰ श्री कुबेरनाथ मिश्र विचित्र (1935), देवरिया; डॉ॰ रमाशंकर श्रीवास्तव (1939), दिल्ली; डॉ॰ रवीन्द्र श्रीवास्तव उर्फ जुगानी भाई (1942), गोरखपुर; सूर्यदेव पाठकपराग

(1943), सीवान; वीरेन्द्र कुमार मिश्र 'अभय' (1950), सारण; मिर्जा खोंच, ब्रज बिहारी प्र॰ 'चुर' (प॰ चम्पारण); डॉ॰ गोरख प्रसाद 'मस्ताना' अरूण चम्पारणी(बेतिया, प॰ चम्पारण); सुरेश काटंक (कांट), विक्रमा सिंह, ब्रजमोहन राय देहाती, अरविन्द विद्रोही, गंगा प्रसाद अरूण, हरिद्वार प्र॰ किसलय, बरमेश्वर सिंह, रामजी पांडे अकेला, धनुषधारी कुशवाहा, बादशाह तिवारी, आदि। डॉ॰ शंरमुनि राय 'गडबड' के व्यंग्य के उपर आपन शोध बा।

प्रसिद्ध भोजपुरी विद्वान आ आलोचक डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र के मानल बा कि – **"व्यंग्य कवितन भा गद्य के साथे विडम्बता बा कि उ तात्कालिक स्थिति चाहे राजनीतिक चाहे विशिष्ट व्यक्तियन पर केन्द्रित होला। ओह तात्कालिक स्थिति का सामाप्ति के बाद चाहे बदलाब का कारण, ओह पर केन्द्रित कवितअन भा आलेखन के प्रभाव खतम हो जाला। कालांतर में असरदार ना रह जाए।"**

चम्पारण में आधुनिक भोजपुरी साहित्य के परम्परा में के कवि श्याम विहारी तिवारी 'देहाती', बृजबिहारी प्र॰ चुर, रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त', बलदेव प्र॰ श्रीवास्तव 'ढीबरी लाल', जीगर मेहरावरी, रमेशचन्द्र झा, पाण्डेय आशुतोष, शिव प्रसाद किरण, दीपक एन्थोनी, बगैरह कृतिशेष बानी। अबहीं चम्पारण के पछियारी भाग सें शुरू करी तें श्री दिनेश भ्रमर, व्रतराज दूवे विकल, अरूण चम्पारणी, अश्विनी आंसू, योगेन्द्र शर्मा, हरेन्द्र हिमकर, डॉ॰ गोरख प्रसाद 'मस्ताना' चर्तुभुज मिश्र आदि के साथे मिर्जा खोंच' के नाम भी सोझा आवेला। जइसन नाम वहसन काम खोंच – खोंचहा, खरकोंचहा, गलत बात में खोंचबाजी कइल, विरोधी स्वर उ विरोध सता के दुरूपयाग के खिलाफ हो, सामाजिक कुरूपता, विद्रूपता, असामनता, पारिवारिक रिश्ता में आइल कमजोरी, विखराव, घटाव, लोभ, लालच भा देश–दुनिया में घटत घटना के खिलफ खोंच आपन कलम से जरूर हस्तक्षेप करेनी। साहित्यिक गुजबाजी से लेके सम्मेलन तक के बखिया उधेरे में कोनो कंजुसी खोंच साहेब ना करीं। खरी–खरी कह में माहिर मिर्जा खोंच निमन निमन जाने के खोटी भी सुनावेलन। इ सब खोंच के कवितन आ आलेख में ऐना नियर साफ लउकी।

तमाम भोजपुरिहा समाज के मिर्जा खोंच के शुक्रमंद होखे के चाहीं के उहाँ के ऊर्दू साहित्य के उद्भट विद्वान बानी लेकिन भोजपुरी माई के सेवो समान भाव आ श्रद्धा से क रहल बानी। उर्दू में एगो नया विद्या 'ग़ज़ल' के सृजक मानल जाए वाला मिर्जा खोंच विगत चार दशक से भोजपुरी में आपन कलम चलावत बानी। दर्जनों भोजपुरी साहित्य के पत्रिकन में इहाँ के कविता भा आलेखन छप रहल बा। दुरभाग भोजपुरी के बा जवना के आगे बढ़ावें में लागल बाझल संस्था जात पात भा क्षेत्रवाद से घुना गइल बा। साहित्यिक पत्रिका भी उहे कइलख। जवन कबो चम्पारण कारी ताके के कोशिश लेक ना कइलस। गलती चम्पारण के रहे वाला उ साहित्यकार आ संस्था चलाये वाला लोगन के भी बा कि इनका घरे 'हीरा' पैदा भइल जवना के परख ना कइल गइल। मिर्जा खोंच के एगो बड़ खुबी हऽ कि उहाँ के उ तमाम भोजपुरी के पत्र–पत्रिकन में चिट्ठी पतरी लिखत रहेनी।

अब जब मिर्जा साहेब के उमर 65 से ज्यादा हो गइल बा आ बेमारिओं किसिम किसिम के तऽ इ हमार एगो छोट प्रयास बा हम समस्त भोजपुरिया साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान, आलोचक, साहित्यकार आ लेखकन, पाठकन के सोझा मिर्जा खोंच के कविता आ आलेख के कुछ अंश के समेठेले **"भोजपुरी जिंदगी"** के इ अंक राखी जेसे **'खोंच' साहेब** के ईमानदारी से मूल्यांकन हो सके। जय भोजपुरी

राउरे आपन

संतोष कुमार

प्रयास

इग्नू में भोजपुरी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति का अध्ययन

प्रो॰ वी. एन. राजशेखरन पिल्लई
(वाइस चांसलर) इग्नू, नई दिल्ली

भारत समृद्ध भाषाओं के साथ-साथ उच्च कोटि के साहित्य का देश भी है। हम देश के सभी साहित्य में सदियों से अर्जित ज्ञान का भण्डार सुरक्षित है, यदि हमें इस ज्ञान के भण्डार को आने वाली पीढ़ी के लिए सुरक्षित रखना है तो हमें अपनी भाषाओं को न केवल बनाना होगा बल्कि प्रतिदिन के उपयोग में लगाकर उन्हें और समृद्ध भी करना होगा। यूं तो दुनिया की सभी भाषाएं मधुर एवं महत्वपूर्ण है और भाषाएं मानव के द्वारा मानव को ही दी गई सबसे बड़ी देन है, इसलिए अगर इन्हें हम खो देते हैं तो यह एक बड़ा अपराध होगा। इग्नू में हमने प्रारंभ से जिन उद्देश्यों को राष्ट्रीय दायित्व के रूप में शामिल किया है, उसी को ध्यान में रखकर हमने अपने देश की भाषाओं को भी उचित स्थान दिलाने का बीड़ा भी उठाया है। अपने इसी उद्देश्य के क्रम में भोजपुरी भाषा साहित्य एवं सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक केन्द्र की स्थापना करके इग्नू ने एक अति महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक कार्य भी किया। इस केन्द्र के उद्देश्यों को जानने से पहले हमें भोजपुरी भाषा के महत्व को भी समझ लेना आवश्यक होगा।

भोजपुरी देश की महत्वपूर्ण एवं समृद्ध भाषाओं में से एक है। रेखांकित करने वाली बात यह भी है कि हिंदी भाषा के बाद देश की सबसे अधिक 20 करोड़ जनसंख्या द्वारा बोली जाने वाली भाषा भोजपुरी है।

यह भाषा केवल अपने देश के बहुत बड़े भू-भाग के कई राज्यों बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, झारखंड, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, गुजरात एवं मुम्बई में ही नहीं बल्कि देश से बाहर मॉरिशस, सूरीनाम, फीजी, त्रिनिदाद और टुबैगो, ब्रिटिश, गुयाना, नेपाल, दुबई समेत 17 देशों में 20-25 प्रतिशत लोगों द्वारा बोली जाती है।

भोजपुरी हजार वर्षों से प्रवाहमान और विकसित भाषा है। स्वतंत्र, जीवंत एवं व्यापक स्वरूप लिए इस भाषा में सदियों से समृद्ध साहित्य की रचना होती रही है। आज भोजपुरी भाषा में पद्य एंव गद्य की विभिन्न विधाओं में विपुल साहित्य भंडार मौजूद है। आदिकाल में सिद्ध एवं नाथ द्वारा रचित रचनाओं से लेकर मध्य काल में कबीर तक और आधुनिक काल में राहुल सांकृत्यायन से लेकर हरेन्द्रदेव नारायण एवं विवेकी राय तक अनगिनत विद्वान साहित्यकारों, कवियों, एवं चिंतकों ने भोजपुरी साहित्य के भंडार को समृद्ध बनाया है। लोक साहित्य में तो भोजपुरी का विशाल भंडार मौजूद है। भिखारी ठाकुर भोजपुरी के शेक्सपीयर के रूप में विख्यात है।

भोजपुरी क्षेत्र ने इस देश को महान् सपूत प्रदान किए जिनमें कबीर, रैदास से लेकर भारतेन्दु हरिशचंद्र तक तथा हजारी प्रसाद द्विवेदी, राहुल सांकृत्यायन से लेकर भारत के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद एवं पूर्व उप-प्रधानमंत्री जगजीवन राम से लेकर पूर्व राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वर्तमान समय में अनगिनत भोजपुरी विद्वान, चिंतक, लेखक एवं भोजपुरी भाषा प्रेमी इस भाषा के उत्थान में विभिन्न प्रकार से अपन ऐतिहासिक योगदान दे रहे हैं।

वर्षों से बिहार एवं उत्तर प्रदेश में इंटर से इसकी पढ़ाई होती है। पिछले बीस वर्षों से भी अधिक समय से वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय-आरा, बी. आर. अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय-मुजफ्फरपुरजयप्रकाश विश्वविद्यालय-छपरा, मगध विश्वविद्यालय-बोधगया, नालंदा विश्वविद्यालय-नालंदा, रांची विश्वविद्यालय-रांची, उत्तर प्रदेश में जोनपुर विश्वविद्यालय-जौनपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय-गोरखपुर तथा मॉरिशस में भी भोजपुरी का अध्ययन-अध्यापन होता है। भोजपुरी भाषा के महत्व के आधार पर ही वर्षों पहले बिहार में भोजपुरी साहित्य अकादमी का निर्माण किया गया। यहां भोजपुरी साहित्य से संबंधित दुर्लभ ग्रंथ मौजूद है।

हाल में दिल्ली सरकार ने भी इस भाषा के महत्व को परखते हुए यहां भोजपुरी अकादमी की स्थापना की है। 46 वर्षों से भोजपुरी भाषा से फिल्मों का निर्माण होना इस भाषा की जीवंतता को ही दर्शाता है। सन् 1962 से इस भाषा में उत्कृष्ट लोकप्रिय एवं कलात्मक फिल्मों का निर्माण हुआ जिनमें गंगा भईया तोहे पियरी चढइबों, लागी नहीं छूटै रामा, तथा माई प्रमुख है। वर्षों से आकाशवाणी के पटना, लखनऊ, वाराणसी, गोरखपुर, दरभंगा, मुजफ्फरपुरी केन्द्रों से सभी तरह के कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं। इन दिनों भोजपुरी चैनल **"महुआ"** और **"हमार टीवी"** द्वारा भी भाषा में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं।

भोजपुरी भाषा के इसी व्यापक स्वरूप एवं साहित्य की अविरल परंपरा तथा इसके राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व को ध्यान में रख कर हमने पिछले वर्ष ही आधार पाठ्यक्रम का निर्माण किया है। इस भाषा के महत्व को इसी से आंका जा सकता है कि जैसे ही इग्नू द्वारा आधार पाठ्यक्रम के विशेषज्ञ समिति की बैठक हुई और मीडिया द्वारा इस सूचना

को प्रकाशित किया गया वैसे ही राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस भाषा में संबंधित समाचारों की धूम मच गई। देश-विदेश से प्रशंसा के पत्र आने लगे।

भोजपुरी भाषा साहित्य एवं सांस्कृतिक केन्द्र का मुख्य उद्देश्य है भोजपुरी भाषा एवं साहित्य की प्रचारित करना। जैसा कि पहले बताया गया है भोजपुरी भाषा से साहित्य की अविरल परंपरा रही है। आदि काल से लेकर वर्तमान काल तक विद्वानों ने गद्य एवं पद्य के द्वारा इस भाषा के साहित्य को समृद्ध किया है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि इस भाषा के साहित्य में निरंतर सामाजिक विषयों को स्थान दिया गया है। यही नहीं आज जिन आधुनिक विषयों की सबसे अधिक चर्चा है उन्हें बहुत पहले ही भोजपुरी में स्थान दिया गया था। उदाहरण के तौर पर राहुल सांकृत्यायन को हम सभी हिन्दी भाषा के एक बहुत बड़े लेखक के रूप में ही जानते हैं, लेकिन वे भोजपुरी के भी विद्वान एवं बड़े लेखक थे। यहीं नहीं मेहरारून के **"दुरदशा"** एकांकी में उन्होंने बहुत पहले ही नारी विमर्श के मुद्दे को बहुत की मजबूती के साथ उठाया था। इसी प्रकार समाज के हाशिए के कवियों ने बहुत ही मजबूती के साथ भोजपुरी भाषा में न्याय की बात को उठाया है। लगभग सवा सौ पहले से ही भोजपुरी में कवि मारकंडे दास, कवि रसूल मियां, हीरा डोम, अकुंठ कवि जगरदेव, बिहारीराम, नारायण महतो कवि कुंजन, परगनराम तथा जनकवि बावला ने अपनी लेखनी के माध्यम से सामाजिक न्याय की बात को बुलंद किया। भिखारी ठाकुर को तो भोजपुरी का शेक्सपीयर ही कहा जाता है क्योंकि वे एक चलती फिरती संस्था थे।

बाबा बुलाकी दास, तेगआली तेग, बाबू रघुवीर नारायण, रामविचार पाण्डेय, आचार्य महेन्द्र शास्त्री, रामेश्वर सिंह कश्यप, मुक्तेश्वर तिवारी, चन्द्रशेखर मिश्र, विवेक राय, महेन्द्र मिसिर से लेकर हरेन्द्रदेव नारायण एवं वर्तमान समय के अनगिनत लेखकों ने भोजपुरी साहित्य के भण्डार को समृद्ध किया है। गद्य से लेकर पद्य तक और आधुनिक विद्या से लेकर कम्प्यूटर तक के विषय को भोजपुरी भाषा में स्थान दिया गया है केन्द्र के द्वारा विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों द्वारा उपरोक्त सभी महत्वपूर्ण साहित्य का अध्यापन कराने की योजना है।

भोजपुरी में आधार पाठ्यक्रम छात्रों के लिए उपलब्ध कराया जा चुका है। माननीय लोक सभा अध्यक्षा **श्रीमती मीरा कुमार** ने पिछले वर्ष इस पाठ्यक्रम का विमोचन किया। केन्द्र के द्वारा सर्वप्रथम हम भोजपुरी में सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम का शुभारंभ करने जा रहे हैं। प्रस्तावित योजना के तहत इस भाषा में सर्टिफिकेट कार्यक्रम आरंभ करने के लिए 12 केंडिट के तीन पाठ्यक्रम के निर्माण की योजना बनाई गई है। इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य भोजपुरी भाषा सीखने वालों को अवसर प्रदान कराना है। तीनों पाठ्यक्रमों के द्वारा इस भाषा में लिखना-पढ़ना और बातचीत करना सिखाया जायेगा। साथ ही इस भाषा के आदि से वर्तमान काल तक के साहित्य की संक्षिप्त जानकारी भी दी जाएगी। आधुनिक युग में मीडिया एवं कम्प्यूटर का विशेष महत्व है। अतः इस भाषा में इन क्षेत्रों में हो रहे कार्य की भी जानकारी दी जायेगी जिससे छात्रों को भोजपुरी भाषा में ही इस क्षेत्र में भी कार्य करने का अवसर मिल सके। राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय होने के नाते 20 करोड़ भोजपुरी भाषा-भाषी लोगों के हित को ध्यान में रखकर भोजपुरी भाषा में पाठ्यक्रम निर्माण की बृहद् योजना बनाई गई है। यह पाठ्यक्रम उसी बृहद योजना का हिस्सा है। इसके बाद स्नातक, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम लागू किया जाएगा। जैसाकि ऊपर वर्णित है भोजपुरी में लोक साहित्य, लोक संगीत तथा लोक कला का अकुल भण्डार है। शोध के आधुनिक तरीकों द्वारा इस महत्वपूर्ण खजाने को देश और दुनिया के सामने लाना भी इस केन्द्र के महत्वपूर्ण कार्यों में शामिल है।

भोजपुरी देश ही नहीं कई देशों से बोली जाती है। केन्द्र के द्वारा वर्कशाप, सेमीनार, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा, जिससे मॉरिशस, त्रिनिदाद आदि देशों से हमारा संबंध और भी प्रगाढ़ हो। शोध द्वारा देश-विदेश में बिखरे भोजपुरी साहित्य को एकत्रित किया जाएगा। भोजपुरी भाषा में अनेकों शब्द ऐसे पाए जाते हैं जिन्हें हम द्रबिड भाषा में भी पाते हैं। इस प्रकार इस भाषा के द्वारा उत्तर एवं दक्षिण भारत के साहित्य को और भी नजदीक लाया जा सकता है।

भोजपुरी क्षेत्र में लोक संगीत एंव लोक कला का अकूत भण्डार है। केन्द्र द्वारा इन कलाओं के महत्व को उजागर करना भी महत्वपूर्ण उद्देश्यों में शामिल है।

भोजपुरी भाषा में उत्कृत्ठ फिल्मों के निर्माण की शुरूआत बहुत पहले ही हो चुकी थी। आज बहुत बड़ी संख्या में भोजपुरी फिल्मों का निर्माण हो रहा है इसके साथ ही भोजपुरी में कई टीवी चैनलों पर कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं। इन क्षेत्रों में भोजपुरी जानने वालों की कमी है। केन्द्र द्वारा सिनेमा तथा टीवी से संबंधित पाठ्यक्रमों का निर्माण भी किया जाएगा जिससे भोजपुरी में कुशलता हासिल कर व्यक्ति इन क्षेत्रों में न केवल रोजगार हासिल करे बल्कि सफलता की ओर भी अग्रसर हो।

विश्वविद्यालय ने **प्रो॰ शत्रुघ्न कुमार** को जो एक चिंतक, लेखक, कवि तथा इस विवि के वरिष्ठ शिक्षक एवं इग्नू में भोजपुरी भाषा पाठ्यक्रम के सूत्रधार भी हैं उन्हें इस केन्द्र का निदेशक नियुक्त किया है।

इतिहास

☛ प्रो॰ शत्रुघ्न कुमार
संयोजक भोजपुरी पाठ्यक्रम
इग्नू, नई दिल्ली

नइखे नईका बा बहुते पुरान
ई भोजपुरियन के सब इतिहास
इतिहास के सँउसे पृष्ठ पर
भरल बा ख्याति भोजपुरियन के
सिद्ध नाथ के वाणी में
भरल बा दर्शन सब
कबीर, रैदास, धरनी दास आउर दूलन दास
गुलाल साहेब आउर दरिया साहेब सब
दे गईल संदेश सब, दे गईले उपदेश सब
भरल बा ज्ञान सब ई भाषा में
जीवन के सब क्षेत्र समाईल बा ई भाषा में
राहुल, रघुबीर, धरीक्षण, मोती बी. ए.
भर गईले भोजपुरिया साहित्य सब
बटोहिया, मोती मुक्तक अउर वीर कुँअर सिंह
लिख गइले गाथा दे गईले महाकाव्य सब
सँउसे संस्था का स्वरूप लिए
पधरलन भोजपुरी शेक्सपीयर भिखारी ठाकुर
दलित शिकायत का नींव राख
अईलें प्रसिद्ध हीरा डोम
नईखे खाली कोनो-कोना
ई भोजपुरियन साहित्यकारन के
भर दिहले भण्डार गद्य साहित्य के
राय विवेकी, शुक्ल, रामदेव, तैयब आउर मस्ताना सब
कतना नाम गिनाई, का दी परिचय दास के
रमाशंकर नईखे मोहताज कउनो पहचान के
भरल रहे भण्डार
भरल जाता भण्डार
देश ले, विदेश ले
छा जईहे भोजपुरिया
एगो नईका इतिहास बन।
एगो नईका इतिहास बन।।

बेसरमी से लाभ

☛ मिर्जा खोंच

हम बात करेनी खररा, केहू के गोली लगे चाहे छररा! ए लिए रउआ हमरा ई लेख ई लेख पर आपन आँख लाल पीयर मत करीं। बेमतलब के अपना दिल पर लेवे के जरूरत नइखे। दिल पर लेला से कुछ कुछ होए लागे ला। हार्ट अटैक भी हो जाला! आज ले सुनने बानी के कौनो बेसरम के हार्ट अटैक भइल। इ रोग जब होला त सरम वाला के। एगो फायदा तऽ इहें लउक गइल! दुनिया के हर कोना में बेसरमी से लाभे लउकी। अपना इहाँ ढे खानी बेकारी बा, आ एमे सादी कइलो जरूरी बा। अब बेकारी के कम करे खातिर घर दामाद बनल पहिलका शर्त बा एगो घर दामाद से पूछल गइल के रउआ सरम वरम ना लागेला! ससुराल में बइठत खात बानी आ पत्नी के पिता राउर खाना पानी के खरचा सहत बाड़न। ऊ बड़ा ढ़िटाई से जवाब देलन के **"उनका ना लउकल कि हम बेकार बानी। आ हम इहाँ हराम के नइखी खात ससुर जी खाली पइसा देलन, बाकी सारा काम हम करेनी! बाजार से सामान लाए के, ससुर के आफिस में टीफिन पहुँचाए के, सार सारिन के घरे पढ़ाए के, सासुजी के जी हजूरी करे के, उनकर पानदान साफ करे के, पत्नी के रोब सहे के, ट्रेन के टिकट कटाए के, रासन ले आए के। अरे उनका तऽ फोकट में एगो ईमानदार आ वफादार नौकर मिल गइल बा! हमरा लाज काहे लागी हम तऽ दरमाहा समझ के खाना खानी आ नोकर के साल भर में एगो कपड़ा लत्ता तऽ देबे करल जाला। उनकर बेटी कमाए ले तऽ का ऊ हमार मेहरारू ना लागे।"** जेकरा सरम लागेला, चाहे ओकरा हार्ट अटैक होखेला, चाहे ऊ आत्म हत्या कर लेला ऊ का जाने के दामाद के मजा का होला! बेसरम लोग के दिल बहुत लम्बा चौड़ा होखेला एही लिए ओकरा हार्ट अटैक ना होला आ आत्म हत्या पाप बा एलिए ई कूली पाप ओकरा से ना होखे। ओकर दिल इतना मजबूत होला के बाहरी हमला ओकरा पर असर ना करेला ओकर करेजा पत्थर के हो जाला।

कवि बनला के लिए भी बेसरम भइल जरुरी बा आपन कविता में जब एने ओने के मार के ना घूसावल जाए ऊ कविता कौनो मानी ना राखे! सरोता लोगन के हूटिंग सहे के पड़ेला। रउआ सरोता के तनी बहला फुसला के ना रखब तऽ रउआ मंच के कवि ना होखब! कविता रउआ झूठ बोल के पढ़े के पड़ी। केतनो पुरान कविता होखी कहे के पड़ी के **"रउआ खातिर आजे लिखनी ह।"** रउआ पर लोगवा चोरी के इलज़ाम लगाई, रउआ सहे के पड़ी रउआ बेसरमी ना देखाएब तऽ रउआ गइली काम से। निमंत्रण में रउआ तनको लाज लागल के रउआ भूखे आवे के पड़ी! उहाँ रउआ तनको चिल्लाएब न त कामे ना चली, इहाँ तकले सलादो दुबारा ना मिली। रउआ आधे पेट हाथ पोंछ लेवे के पड़ी। खाना के जौन तरीका ना ओकरा से अलगे खाए के पड़ी। रउआ सरकारी नौकर बानी ओमे रउआ बेसरमी ना देखाएब तऽ ऊपर के आमदनी से हाथ धोए के पड़ी। चपरासी तकले रउआ सलाम ना करी बेसरमी ऊ बैट्री हवे जे हमेसा चार्ज़ रहेला। बेसरम लोग कभो भूखे ना मरे! बेसरम लोग कभो हाथ पसारे सेना हिचके। बेसरमी एगो कला हऽआ कलाके देखावा जरूरी ह ना त कला मोथर हो जाई! बेसरम लोग के ता करजा बिना मंगले मिलेला।

हम पहिले कह चूकल बानी के बेसरमी एगो

कला के नाम ह ऽ जेकर बैट्री हमेसा चार्ज रहेला। कला हऽ त एकर प्रदर्शन जरुरी बा। राजनीति के देखी! तनका भर बेसरमी से खाली बा? टांग मारे के झूठ बोले के, पाँव खींचल जे ना जानल ओकर राजनीति में समझीं खटिया खड़ा बा! इहाँ उहे कामयाब बा जे भाई के चोर समझे, गरीबी ना गरीबन के मिटाए, रिलीफ के माल उड़ाए आ खूब कमीसन खाए आ हल्ला करके दूसरा पर कमीसन बइठवाए! का ई सब काम कौनो लाज वाला आदमी कर सकेला! का कौनो लाज वाला आदमी अपना बेटा के नम्बर बढ़वाए खातिर दउड़ सकेला ओकरा पाले खुददे पइसा नइखे ऊ का अपना बेटा के लिए नौकरी वास्ते पइसा दी! आजकाल उइे धारमिक कहाला जे माल मार के धरम के नाम पर खूब चन्दा दे मंदिर मस्जिद बनवाए! जब ले बेसरमी के ठिकरा आंख पर ना रही कहीं एक नम्बर ना बनी।

तऽ महासच जी, हमार काम जे रहे करब राउर ई काम रह गइल बा के जौन हमरा नजर में ना आइल आ रउआ जानकारी में बा ऊ रउआ बताईं। ताकि हम अपना बाल बच्चा के समझा दीं! हम नइखी चाहत के हमरे एइसन सत्यवादी बनके आपन जिनगी खराब कर लऽ स। जे बेसरमी के पानी आ चाये पी पी के कोस रहल बा हमार गिनती ओमे ना हो। हम ओही के साथे बहे के चाहत बानी।

हम समीक्षक बन गइनी

☛ मिर्जा खोंच

हम ता ना शिक्षक हई, ना परीक्षक हई ना नीरिक्षक हई, हम सोझे सोझे एगो समीक्षक हई। जेकरा लेख में लोग कीड़ा निकाले, जेकर किताब छपला के बाद बिकाए ना, जेकर कविता के केहू पूछे ना, जेकर पढ़ाए पर लोग खुश ना होखे आ जेकरा निगरानी पर कमीसन के महक आवे, ऊ हमरा से सम्पर्क करे। अइसन समिक्षा कर देब के किताब ब्लैक में बीकाई। कवि जी सम्मेलन में बेर बेर पूछल जइहें आ बेर बेर हूट होखिए। निरिक्षक साहब के पदवी बढ़ जाई। उनका कमीसन से क्लीन चिट मिल जाई। आ शिक्षक महोदय के टियूशन में बढ़ोतरी हो जाए। हमरा पर राउर खरचा कम आई। काहे कि हम राउर हई आ रउआ हमार हई। उधारो चल सकेला बाकिर घोड़ा घास से यारी करी तऽ खाई का!

हम तीन साल लगातार चायखाना के चम्पीयन समिक्षक रहनी। हमरा पर अखबार वाला आ चायखाना के मालिक के खास नजर रहे। जब हम हस दी तऽ लोग कहे के गाल बजावता। एगो अखबार वाला हमार काबीलियत देख के हमरा अपना अखबार के मौसम विभाग के समिक्षक बना लेलस। हम ऊ अखबार के सालाना खरीदार बन गइनी। दू लाइन लिखे के रहे। मौसम त साफ रही बाकिर भगवान के लीला, पानीयो बरस जाए तऽ कौनो बात नइखे। जाड़ा में लिखाई के खूब जाड़ा पड़ी आ गरमी में लिखे के खूब गर्मी पड़ी।खाली अपना ओरीया से के बढ़ा देवे के काम बा के लागाता के पिछला साल के रेकार्ड टूटी। फेरू फिल्मी समिक्षक भइनी। आजकाल तऽ हमरा पाले चार गो पत्रिका आ दूगो अखबार हम लिखब उनका छापे के बा। ना छापी तऽ चन्दा देवल बन कर देब।

हमरा अब तऽ केहू के उठावल आ केहू के गिरावल हमार बायाँ हाथ के खेल बा। हम सब जान गइल बानी के बड लिख के उठावल जाला आ छोट लिख के गिरावल जाला। आई जल्दी भाई आ हमरा से लाभ उठाई भीड़ लाग जाई तऽ हमरा पर ई इल्जाम मत धरब के समिक्षक बन गइल बा तऽ बन रहल बा। ए घड़ी तऽ कम पईसा पर कर देब बाकिर जब हमार सेकरेट्री आ जाई तऽ हमरा से मिलल मुस्किल हो जाई ओ घड़ी का होई? ओ घड़ी जब हम प्रकाष्ठा पर रहेब रउआ पाले अंगूरी काटे से फुर्सत ना मिली के हमरा से रउआ पहिले काहे ना मिलनी।आई जल्दी से समय पर ना त फेरू मत कहेब कि हमरा खबर ना भईल।

मनमौजी

☛ मिर्जा खोंच

फगुआ में हम बिरहा गइनी।
डिस्को गायक जी कहलइनी।।
सम्मेलन में पाई ना भेंटल।
बाकिर कविता पढ़ के अइनी।।
राजनीति में आके चखा।
"जात गवइनी भात ना पड़नी"।।
हम त ऽ गइनी हरना मारे
बाकिर भेंटल बगुला मैनी।।
हमरा के तू का समझे ल।
अपना से सम्मानित भइनी।।
मेहरारू के बल बूता पर।
मंत्री के चम्चा बन गइनी।।
जब जब मिर्जा कुरसी ठेकल।
अपना के उपर उठवइनी।।

बबुआ जी के सुनी बखान

बबुआ जी के सुनी बखान।
चाउर बेच के कीनस धान।।
अपना बपसी के दौलत पर।
उनका बाटे बड़ी गुमान।।
जौन काम में हाथ लगावस।
हो जाला ओमे नुकसान।।
रोजीना स्कूल ऊ जालन।
बाकिर रहे खेल में ध्यान।।
रोज रोपइय दे मंदिर में।
एगो बस मागस बरदान।।
हम बालक अनपढ़ नादान।
पास करा दीं हे भगवान।।

उधार खाइले

खूब ले के ढ़ेकार खाइले।
ढ़ेर जगे हम उधार खाइले।।

एगो मरदाना तू हे नइ खऽ जी।
हमहूँ बेलना से मार खाइले।।

हम जे खानी ऊ घूस ना लगे।
सेब, केला, अनार खाइले।।

खूब होखेला चटपटा कविता।
जब कभो हम अचार खाइले।।

खानी जब दूसरा के मूड़ी पर।
एगो के पूछे चार खाइले।।

बात बा माल ले खपावे के।
कहवाँ मिर्जा से पार पाइले।।

आए जाए में बा

परीसानी बस आए जाए में बा।
मजा समधियाना में खाए में बा।।

जे साथे रहे काल तलवार के।
उहे आज गाए बजाए में बा।।

ना बनला में अपना बा कुछ फाएदा।
जे यारन के मुरगा बनाए में बा।।

ले लेनी हाँ करजा ऊ लौटाई का।
मजा ओकरा ले के पचाए में बा।।

ना ले वे के बा ओकरा साहित्य से।
इहाँ **"खोंच"** खाए पकाए में बा।।

दोहे

हास्य व्यंग्य

ना आएब

मिर्जा खोंच

[एक]

माई से पहले सासू के करते रहब सलाम।
हम तऽ उनका बेटी के बानी भइल गुलाम।।

जहाँ दया तह हानी है वहाँ।
जहाँ धरम के बात होखे उहाँ से रस्ता नाप।।

बड़े बड़ाई जे करे बोले बड़का बोल।
खोंच मियाँ कहले बाड़े ओकरे बा मोल।।

फीस मार के शिक्षक के जे विद्यार्थी 'खाए'।
खोंच मियाँ के कहना बा सीधे स्वर्ग उ जाए।।

[दू]

कब ले दू नम्बर के खइबऽ भाई हो?
पकड़इ बऽ त ना ही केहू बचाई हो।।

पत्नी जी के पैर बूझाता भारी बा।
बैक ड़ोर से खाली तनी खटाई हो।।

ओकरा से बस अब दूरे रहला में बा।
अपने से जे अपने करे बड़ाई हो।।

पढ़ के बबूनी घर के काम भूला गइली।
कहवाँ से आइल बा नया पढ़ाई हो।।

सासू जी के खातिर दू दू गो गद्दा।
खाली खटिया पर सूती अब माई हो।।

परेम के रोग बूढ़ौती में मिर्जा साहब।
नइखे निकलल एकर कोई दवाई हो।।

मत करऽ हमरा परीसान, सुनऽ, ना आएब।
हो रहल बा बड़ा नुकसान, सुनऽ, ना आएब।।

उनका खातिर तऽ उहाँ अंड़ा परौठा आइल।
औरी हमरा लिए बस पान, सुनऽ, ना आएब।।

उनकर महतारी हई के टेप रेकाडर कौनो।
खाए लागे ली हमार कान, सुनऽ, ना आएब।।

हम तऽ ई देस के मामूली नागरिक बनी।
बाड़ी ऊ गाँव के प्रधान, सुनऽ, ना आएब।।

रोज हमरा के खीयाएलू तूँ रोटी चटनी।
छोड़ के आज ई पकवान, सुन ऽ ना आएब।।

हमरा देवे के अगर बाटे तऽ नगदी दे दऽ।
तोहरा से लेवे खातिर धान, सुन ऽ, ना आएब।।

आज तंखाह मिलल बाटे पहिलका हमरा।
मत देखावऽ तनी मुस्कान, सुनऽ, ना आएब।।

नइखे हिम्मत के तोरा पाले तनी जाईं हम।
लुट गइल बा सभे अरमान, सुनऽ, ना आएब।।

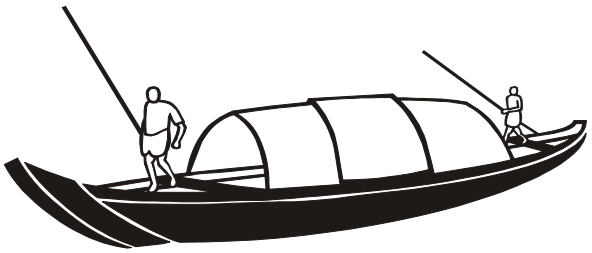

हास्य-व्यंग्य

मुहल्ला के अधकट्टी इतिहास

☛ मिर्जा खोंच

ई हमार आपन सोच बा आ सोच पर केहू के पहरा ना होखेला। हमार ई सोच बा के हमरो मुहल्ला के इतिहास होइत आ हमार नाम ओमे सब से पहिले रहित चाहे सोना के अछर मे लिखल जाइत! सोचल कौनो अपराध ना हऽ, केहू कुछहो सोच सके ला! जब केहू अपना पत्नी के जीभ पर लगाम ना ला सकेला तऽ केहू के सोच पर कइसे लगाम लगा पाई! रउआ ई सोचत रहीं के मिरजा पागल हो गइल बा। जे लोकतंत्र में राज तंत्र के बात कहता। हमरा मुहल्ला में इंतिहास बनला के कौनो निसान नइखे लउकत, बाकिर कौनो ना कौनो घटना अइसन घट जाला जे बाद में इतिहास के रुप धर लेला! हमरा ई बात पर भरोसा बा के कौनो ना कौनो घटना घटबे करी। हम देख रहल बानी के हमार मुहल्ला के इतिहास बजार मे आए आए तले भूगोल आ जाई! हमरा इहाँ के मोरी मे सालों भर बाढ़ आइल रहेला! कूड़ा के ढ़ेर कभी भी पहाड़ी बन सकेला! मोरी के किनारे के झाड़ी में सदा बहार जंगल के महक आ रहल बा आ सड़क के बीच मे जे गढ़हा बा ओमे हमेसा पानी भरल रहेला जेकरा से पोखरा आ झील के भविष्य लउकेला। ई सब निसानी देख के लाग रहल बा के हमरा मुहल्ला के भूगोल हालिए बाजार मे आ जाई! बाकिर हमरा अपना इतिहास के चिन्ता सता रहलबा के ऊ कब आई! हमरा ई बात से ड़र लाग रहलबा के इहवॉ के लोग लोकतंत्र के रास्ता पर चल रहल बा! समानता के बात कर रहल बा। इतिहास बनला खातिर औरी कुछ हो ना ता एगो राजा रानी चाहीं जे तनी दूसरा मुहल्ला से लड़ै आ लोकतंत्र में ई कुली ना होखेला!

दाह-संस्कार खातिर एगो बहुत बड़का समसान घाट हमनी के मुहल्ला के सटले बा। जे हमनी के ही वार्ड में पड़ी! बाकिर अगल बगल मुहल्ला के लोग अगर ओमे मदद ना करे त ओकर पेट ना भरे तऽ ऊ समसान घाट अपना होखला पर पछताई! राजा महाराजा लोग रहित तऽ लड़ाई झगड़ा में मरे वाला से एकर पेटो भरत रहित। हमार मुहल्ला तनी नया बसल बा एलिए कवि आ साहित्यकार लोग कम बा! ना ता हम उहे लोग के बात छिल्लन के लड़ाई मान लेती। हमरा इहाँ लड़ाई तऽ होला, खूबे होला, बाकिर जबानी होला। हमार कहना बा के जब भगवान हाथ देले बानी आ लाठी फट्टा, भाला तेरवार बनवइले बानी ता मुँह से काहे लोग लड़ेला बात समझ मे ना आवे! इतिहास बनावे खातिर मरे मारे वाला लड़ाई लड़े के चाहीं! केहू मरे ना त ऽ लड़ाई कइसन?

इतिहास बनावे वाला लोग हमरो मुहल्ला मे बा, बाकिर अनुपात कम बा! फेर पूलिस ओ लोग के पकड क़े ले जाले! कभो स्मगलिंग, कभो चोरी आ कभो बम बनाए के आरोप मे फंसा के जेल भेज देले। जे दिन अइसन लोग के अनुपात बढ़ी रउआ समझलीं के का होई! हई बेरोजगारी के देख के हमरा उम्मीद बा के अनुपात जल्दीए बढ़ी! जे तरे चारा खाना, दारुखाना के अनुपात बढ़लासे हमनी के प्रगति में चार चाँद लग रहल बा, अगर एगो सीनेमा हाल बन जाई तऽ हमनी के संस्कृति मे एगो सूरज लाग जाइत!

कुछ लोग कहेला के ढ़ेखानी स्कूल आ कालेज खुली तऽ कौनो बात बनी! इतिहास अपने आप बन जाई। ऊ लोग के बात पर हमरा हंसी आवेला! पढ़ लिख के बेकार बनला से नीमन बा जाहिल रह के बेदाम बेचल! कम से कम जेबी में दूगो पाई तऽ रही! जहाँ झाड़ फूँक आ जनतर से रोग भाग जाए उहाँ ड़ाकटर के कवन कार! जब शिक्षा के महक फैली तऽ लोगवा लड़ल बन्द कर दी! जात आ धरम पर जब लड़ाई बन हो जाई त लड़ाए वाला लोगवा बेकार हो जाई! जहवाँ पुलवा नइखे उहाँ के लोगवा नाव से नदी पार करेला आ डूब के मरेला ए तरे देस के आबादी कम होला! ई शिक्षा हमार मनोकामना ना पूरा होखे दी। हमार नाम सोना के अच्छर से का अलकतरो से ना लिखाई।

पड़ोसी

☛ मिर्जा खोंच

हमरा विचार से पड़ोसी के सही अर्थ केहू नइखे बता सकेला। एकर अर्थ भाग के सहारे निकले ला। जेकर नीमन भाग ओकर पड़ोसी नीमन जेकर भाग खराब ओकर पड़ोसी खराब। पड़ोसी नाम हऽ, खुशी, गम, नेक, खराब, मोहब्बत, नफरत, दुर्गत, आफत, आ मेहनत के मिकचर के चाहे जूस के। ना एकर कौन रंग हौला न रूप, ना समोसा, ना सूप, ई बात तऽ तय बा के जेकरा किसमत नीमन होला ओकरे ठीक पड़ोसीया भेंटाला। हर पड़ोसी में 'ना' ढेखानी होला आ 'हाँ' कम होला बहुत कम पड़ोसिया अइसन मिली जे राउर जरूरत पर राउर जेबी भारी कर दें। कब कौन पड़ोसी प्रेम करत करत घिरना करे लागे केहू नइखे जानत ! केहू के देख के, ओकरा रहन सहन, ओकर खात पियत देख के जरे वाला के ओकर पड़ोसिया कहल जाला ! आज के पड़ोसी आपन कर्तव्य तऽ भूल जाला बाकिर आपन अधिकार के बारे में अधिक जानेला। केहू पड़ोसिया के प्रगति देख के दूसर पड़ोसिया के जरल ओकर गुप्त अधिकार बा। रुतबा में राउर पड़ोसिया राउर सम्बंधी से बड़ा होखेला रउआ घर में आग लागी ता उहे पड़ोसिया एक गिलास पानी ले के दउड़ल जाला आ अपना बेरिया चाहे ला के ऊ सौ बाल्टी पानी लावस। धारमिक, राजनैतिक, समाजिक आ आर्थिक दृष्टिकोण से एगो पड़ोसिया के अधिकार पड़ोसिया के बा दोसर केहू के नइखे।

उनका कर्तव्य पर उनकर अधिकार भारी पड़ेला एक लिए हम उनकर अधिकार पर बात करी तऽ रउओ नीमन लागी आ हम हूँ नीमन लेखक कहलाएब। एगो अधिकार कानून ओकरा देला आ दूसरका अधिकार ओकर आपन होला जेकरा लहेड कहल जाड़ा। ई अइसनका अधिकार बा जेकरा बारे में खोल क कह देवल जाव त रोज मार होखी ! कहावत बा के एगो पड़ोसी घरे मेंघ बरसी तऽ दूसरका के घरे बौझा जरूर पड़ी। मगर अब तऽ घर अइसन बनावत बाड़े लोग क मेंघ बरसे चाहे लू तनको खबर ना मिली। अब तऽ एक पड़ोसी के खबर दूसर पड़ोसी के इहाँ अखबार से मिलेला चाहे नसीबन मौसी अइसन तऽ नीमक मिरचा लागके बतावस। अब तऽ एगो पड़ोसी के इहो सहनाई बाजे ता दूसरका पड़ोसी के कान बन्द कर लेवे के चाहीं काहे के उनका घर से इनका दू दू हाथ हो चुकल बा।

एक पड़ोसिया के पत्नी के नजर में दूसरकी पड़ोसन कलमूही, मुंह जरी, आ मनहूस होखे, सवेरे सवेरे ओकरा मुँह देख लेला से कौनो काम न होखी, ऊ मुँहझउसी तऽ हमार मरद पर निगाह गड़ौले रहेले। ओकरे चलते हमार बेटवा हरदम बिमार रहेला, ड़ाइन हीअऽ पक्का डाइन ! एगो अधिकार होला **"रसोईघर अधिकार। बहिना तनी सरसों के तेल देबू, राते खतम हो गइल बा मुनवा के बावा काम पर जा तारन, तनी अंडा तले के बा। दुलहानिया, तनी चार रोटी के आटा दे देबे, देख ना काले खतम हा गइल, तोहर चाचा काल्हे बाहर चल गइलन हाँ, ए लिए ना मँगा पइनी। ई अधिकार श्रंगार मेज के पाले रद हो जाला। भौजी, तनी आपन टिकवा देब एगो मेहमानदारी में जाएके बा आवते दे देम।"** टिकवा तऽ काले बड़की ननद ले गइली हऽ ना तऽ दे देतीं।

ओने रउआ अखबार कीन के ले अइनी टेबुल पर रख के घर में कौनौ काम से गइनी के एने पड़ोसिया उठाके ले गइलन, ओने से अखबार अवेला बाकिर फाटल मीमोऱाइल। पता चलल के पड़ोसिया के बेटवा ओपर बइठ के खेलत रहे। कौनो मेहमान के अइला पर चादर, चौकी आ मच्छरदानी माँग के ले गइलन, एक हफ्ता के बाद तोर मोर भइला के बाद टूटल चौकी आ ममोऱाइल चादर वापस भइल। मच्छरदानी लौटल बाकिर दूसर। अऊर तऽ अऊर ओकर बेटा गेंद से खिड़की के सीसा तूड़ देलस, दूसरका गमला टूड़ देलस। पड़ोसिया के चलते कहीं सादी जम जाला आ कहीं खटाई में पड़ जाला।

तऽ हम कहाँ से पड़ोसी के बारे में बताई हम हूँ तऽ केहू के पड़ोसिया हईं ! इलजाम हमरो पर लाग सकेला के बड़का लेखक बन रहल बारन। अपना घरवा के बारे मे नइखन लिखत। रोज पत्नी से नोक झोंक होला जे दिन उनकर सासू जी आजास ओ दिन मत पूछी हमनी के जाके बीच बचाव करे के पड़ेला कई गो किताब इकट्ठा करके एगो लेख लिख लेलन बड़का लेखक बनेलन। जे भी हो लेकिन जिनगी के उदास घड़ी में एगो पड़ोसीए काम पड़ेला। हसे से, लड़े के, लड़ाए के, जरे के, जराए के, व्यंग करे के, आदमी के फितरत ह एकरा व्यवहार में लाए खातिर एगो पड़ोसिया के जरूरत पड़ेला। केकरा पर मुँह फेर के हँस बऽ अगर पड़ोसिया ना रहे। पड़ोसी में लाख बुराई बा बाकिर बिना पड़ोसी के जीवन रंग हीन आ उमंग विहीन बा।

हास्य व्यंग्य

ये दिल माँगे मोर

☛ मिर्जा खोंच

ई दिल अजबे बा मेडिकल साइंस वाला लोग एकरा के अपने आप चले वाला पम्प कहे ला। एकरा पूरा देह में खून सपलाई होला। बाकिर दूसरा ओरीया देखल जाओ तऽ दुनिया में जेतना भी काम होखता ओमे कहीं ना कहीं दिल जरूर टाँग फसउले लाउकी! देखे में तऽ ई मास के एगो लोथड़ा बा! मगर एकर काम गजब के होला। कहे के तऽ पूरा सरीर के मालिक दिमाग होला बाकिर ई दिल के कमजोर मत बूझीं। कभो एकरा गुस्सा आ जाए तऽ दिमागो के दू तीन पटकनिया लगा देला। दिल कहेला के उनकर अँचरा पकड़ लऽ आ दिमाग कहेला के 'ना' पीटा जइबऽ! जहवाँ दिल के बात मान अँचरा पकड़लऽ, के पीटहइलऽ! अगर ई दिल खाली खून सपलाई करेवाला एगो पम्प बा तऽ कौनो सुन्दर चीज के देख के काहे धड़के ला! कौनो चीज चहला पर ना मिले तऽ दिल बइठ काहे जाला। अब रउअे कहीं के ई दिलवा खाली खून सपलाई करे वाला पम्प बा के औरी कुछ बा। दिल घबड़ाला, दिल मचले ला, दिल रुठेला, दिल मान जाला। इ कुली का हऽ, खाली पम्प रहित तऽ ई सब ना होखित! केहू कहेला के दिल पिंजड़ा के पंछीं हऽ जेकरा मुंह में जौन आएला बक देला। लोक तंत्र में इहे तऽ नाजाएज फाइदा मिलल बा। जे जौन चाहे बोले, केहू ना रोकी।

दिल के बारे में बहुतो बात उड़ावलो गइल बा आ बहुत बात ठीको कहल गइल बा। दिल कभो ढेखानी माँगे ला तऽ कभो कम माँगेला। रउआ अंग्रेजी में ए तरे समझ लीं के **"दिल मांगे मोर"** आ **"दिल माँगे लेस"**। **'मोर'** हमेशा माँगेला आ **'लेस'** कभो कभो! काहे कि इच्छा के कौनो आखरी पड़ाव नइखे। आ इच्छा के सम्बंध दिल से होला एलिए ये **"दिल माँगे मोर"** आ जब आदमी **'ऊँचाई'** पर जाला तऽ ओघड़ी **"दिल माँगे लेस"**! मोर माँगेवाला जहाँ करोड़ो में बा उहाँ लेस माँगे माला करोड़ में एगो दूगो। अब ई दहेज के मामला देखीं असली दामाद के बाते छोड़ी, घर दामादो कभो **'लेस'** ना चाहे ओकर दिल बस **"मोर मोर"** चिल्लाएला।

अर्थशास्त्र में दिल कहेला पहिले खाना, फिर कहेला कपड़ा, फेरू कहेला मकान! एगो मिलल तऽ दूसरका चाहीं, दूसरका मिल गइल तऽ तीसरका चाहीं दिलवा रूके वाला नइखे। दिल रूकेला ऊ लोग के जिनका पाले धर्म बा। काहे के एकरो कौनो सीमा ना होला ईश्वर पर लव लागल रहेला। ऊ जे दी हें खाए के बा, जे दीहें पहिने के बा, आ जेतना दीहें ओही में गोड़ लपेट के सुते के बा। अइसन लोग के दिल भकती पर पूरा विश्वास राखेला एही लिए इलोग के दिल कभो फेल ना करे आ जेकर दिल लोग बाग के देखाए के लिए भकती करेला ऊ जल्दी फेलो हो जाला। कुछ कवि लोग अइसन बाड़न जिनकर दिल हमेसा **'मोर मोर'** चिल्लाएला! गोस्ठी में गइला के बाद सम्मेलन में जाए के सपना देखा तारन आ सम्मेलन में जहाँ हूट होखस उहाँ **'हिट'** होखे के चाहऽ तारनऽ। जहाँ एगो कविता पढ़ला पर भागे के मन करे उहाँ दू तीन गो कविता पढ़े के चाहऽ तारन पहिले चिचिया के, अ बरबरा के पढ़ऽ तारन, ऊहाँ अब राग में पढ़ तारन। जहाँ ई अपने मन से दू गो कविता पढ़ के हूट होत रहलन उहाँ अब चाहत बाड़न के श्रोता ओरिया से **'वन मोर'** के आवाज आए जब सम्मेलन में पार घाट हो गइलन अब पत्रिका में छपे के बात चलता।

सवाल पैदा होता के दिल्लवा **'मोर'** काहे मागेला। काहे ना मांगे। तनी हइना ना सुनी एक जने गावत रहले –

इस दिल में अभी और भी ज़ख्मो की जगह है। अबरू की कटारी को दो आब और भी ज्यादा।।

ई गीत तऽ मोर के परकास्टा हो गइल। आखिर ऐ दिल के जखम से चूर होए के कौन जरूरत आ

गइल एगो घाव से काम नइखे चलत। तऽ जबाब का मिलल तनी रउओ सुनी। हम आपन सतुआ जुत्ता में सानी रउआ का! कौनो दो हो दोसी दिल होता, एकर वजह ई बा के दिमाग से ना पूछे ला। काहे के दिमाग के जवाब से अच्छा तऽ दिल के बात लागत बा दिल मांगता मोर त हम दिमाग पे आपन काहे जाएब। एक ओरिया दिल बा दूसरका ओरिया दिमाग बा। केकर बात मानल जाव दूनू आपने बा। बाकिर दूनू के अलगे अलगे काम बा। एगो के आपन खास समय बा आ एगो के सौतेला तऽ ई होबे करी। जब दिमाग आ दिल दूनू मिलके काम करी जब दिल **'मोर'** मांगे उ बात के दिमाग के पेबंदी। जब दिमाग हाँ कह दी ता **'मोर'** मांगी आ ना करलस ता छोड़ दी दिल मांगे मोर तऽ मत मचाई सोर ना तऽ बहे लागी नैन के कोर! करिया हो या गोर, जौन मिल जाय ओकर के मोकददर समझ लीं। एक जाने ठीके कहले बाड़ें –

जो मिल गया उसी को मुकद्दर समझ लिया।
जो खो गया मैं उसको भूलाता चला गया।।

झूठो मूठो **'मोर' 'मोर'** चिल्लाइला से का लाभ –

जितना मिलना बा मोकददर में हम उतनी पी चूके।
मरने के दिन बाकी रहे जीना बा जेतना जी चूके।।

हर क्रिया के प्रतिक्रिया होला। रउआ मोर मोर चिल्ला तानी काल तोहार दामाद **'मोर' 'मोर'** चिल्लाए लागे तऽ तोहरा कइसन बूझाई। कवि सम्मेलन मोर माँगत तोहर चोरी ना पकड़ा जाए। भाँड़ा फूटी तऽ रउआ कवि चोर कहलाएब, राजनीत में **'मोर'** मांगत मांगत कहीं जमानत ना जप्त हो जाए। **'घूस खात खात कहीं'** धरा मत जा। एह तरे मांग बा मोर आ हो जाई लेस। मांगे के काम दिमाग के कहला पर करीं। ना तऽ हम तऽ समझा देनी, जे कहे के रहे कह देनी। रउआ जानी आ राउर काम जाने।

सब का बस के बात बा का?

मिर्जा खोंच

मेहरारू के गाल बजावल सब का बस के बात बा का।
ओकरा उपर रोब जमावत सब का बस के बात बा का।।
नेता बाड़न एही से उनका ई बात के डर नइखे।
बाकिर घूस के माल पचावल, सब का बस के बात बा का।।
जीत के कौनो काम ना कइनी बाकिर जीतब हम उहवें।
मतदाता के ऊहाँ रीझावल सब का बस के बात बा का।।
करजा ले वे में हम तऽ उस्ताद कहल जानी यरवा।
महँगी पकवान बनावल सबका सब का बस के बात बा का।।
जे बा घर के दूब्बर पातर ऊहे इहवा काम करीं।
दुबई जाके ऊँट चरावल सब का बस के बात बा का।।
मेहरारू के खातिर लोगवा बाप आ माई के छोड़े ला।
बाकिर रासन कार्ड बनावल सब का बस के बात बा का।
जे घर में घुस के हमरा आ पत्नी में लड़वा देलस।
ऊ सरवा के घर से निकालल सब का बस के बात बा का।।
आपन खा के कहे के हम तऽ मिर्जा इहवाँ खइनी हँ।
अइसन का मेहमान बोलावल सब का बस के बात बा का।।

हास्य व्यंग्य

मिर्जा खोंच

मुनवा के महतारी

सुनऽ मुनवा के महतारी
सुनऽ मुनवा के महतारी
मत कर ऽ हमरा से झगड़ा
मत पड़ोसिया के द ऽ गारी।
सुनऽ मुनवा के महतारी
तनी हमरा ओरिया ताक ऽ।
तनी केसवा ओरिया झांकऽ।।
बूढ़ौती में हमरा पर रुकऽ!
जान के बालू मत फांकऽ!!
बाटे हमरा गहिरा यारी...2
सुना मुनवा के महतारी
तोहरा हमरा पर सक होला।
बदल ले बानी हम चोला।।
पहिन के करीयकका चसमा।
कहीं ताका झांकी होला।।
ई तोहमत बा बड़का भारी...2
सुना मुनवा के महतारी
तू जे अब हमरा से लड़के।
अपना नइहरवा चल जइबु
सुन लऽ हमरा दिल के रानी
बड़ा उहवां तू पछतइबू ऽ
हम हूँ चल जाएबऽ ससुरारी...2
सुना मुनवा के महतारी

अपना खेत के पहरा करनी

अपना खेत के पहरा करनी।
ऊनकर खेत में जम के चरनी।।

समय पर काम चलावत रहलन।
बड़ा बूझाता उनकर मरनी।।

चोरी के धन भइल बा चोरी।
जइसन करनी ओइसन भरनी।।

घर के बाहर बीर बहादुर।
घर में मेहरारू से हरनी।।

सिखनी जेकरा से उड़ल हम।
ओकरे परवा जाके कतरनी।।

जेतना गलती सलती आपन।
सब उनका मूड़ी पर घरनी।।

घर में घी के दीया बार के।
बाचल तऽ महलीऽ में बरनी।।

भोज में हाली खइनी मिर्जा।
नेवता बेरिया कहां ठहरनी।।

کُل ہند جماعت برائے بھجپوری
कुल–हिंद जमात बरा–ए भोजपुरी
KUL-HIND JAMAT BARAI BHOJPURI
H. No. 227, LG-I, Hauzrani Malviya Nagar, New Delhi-110017 Ph: 9818948462

"भोजपुरी जिंदगी" के मिर्जा खोंच विशेषांक निकाले खातिर भाई संतोष कुमार जी के बहुत बहुत शुक्रिया।

तनवीरुल हसन
अध्यक्ष

हास्य व्यंग्य

मिर्जा खोंच

आई हो दादा

बाटे किस्तम में होल, आई हो दादा।
बेटवा निकलल बकलोल, आई हो दादा।।

खुलते जाता अब पोल, आई हो दादा।
आसन बा डावाँड़ोल, आई हो दादा।।

हो जाइ गेना बैक उ का जानत रहलें।
अपने में हो गइल गोल, आई हो दादा।।

किनते किनते में जे एगो सटका लेनी।
ऊ अंडा निकलल घोल, आई हो दादा।।

हम परवल के लत्ती रोपले रहनी जहवाँ।
उन्हें निकलल तिरकोल, आई हो दादा।।

बंदूक बिकाइल दादा के, घर में बाकिर।
सोभेला अब ले खोल, आई हो दादा।।

सब लोग सराहे गीत गज़ल मिर्जा जी के।
पत्नी के लागे झोल, आई हो दादा।।

सीखऽ

अनकर जेबी हरे के सीखऽ।
मारके जल्दी टरे के सीखऽ।।

आपन खेत के जम के पहरा।
अनकर खेत के चरे के सीखऽ।।

परतिसठा से पीए खातिर।
मेहरारू से ड़रे के सीखऽ।।

जेतना उपर के इनकम बा।
गुप्तरूप से धरे के सीखऽ।।

"खोंच" मिया भूखे मरजइ बऽ।
पहिले आपन भरे के सीखऽ।।

इतराइल बा

ऊ ओतने में इतराइल बा।
के चम्चा बन के आइल बा।।

हम साँच बात जे कह देनी।
ऊ हमरा से कोहनाइल बा।।

भौजइया चपत लगइलस का।
मुँहवा काहे मुरझाइल बा।।

बन भइल कमीसन जे दिन से।
मन ओ दिन से मरुआइल बा।।

पत्नी भागल, भागल लेकिन।
ऊ अपने कहाँ लूकाइल बा।।

ससुरारी में रहते रहते।
इज्जत के आँच सेराइल बा।।

जे जेतने में बाटे **"मिर्जा"**।
ऊ ओतने में अझुराइल बा।।

हे भगवान

अब का होखी हे भगवान।
गदहा जी बाड़ें श्रीमान।।
जाहिल रह के बन जा नेता।
पढ़ल लीखल के काटऽ कान।।
घूस, गरीबी आ बेकारी।
इहे बा आपन पहचान।।
धान खरीदऽ बेच के चाउर।
चूहा जी के बा फरमान।।
आपन बचा बचा के रखिह छ।
अनकर माल के कर दऽ दान।।
झूठवा जेतना जे बोले।
लोग करे ओकर गुन गान।।
हलुआ पूरी, दूध मलाई।
उहे बा उनका जलपान।।
हमरा जइसन के हू नइखे।
कहेला मिर्जा सीना तान।।

हास्य व्यंग्य

मिर्जा खोंच

लात, बात, बरसात

धरम करम के मारी लात।
पेट भरे ऊ होखे बात।।

अइसन कार करे के बा।
पइसा के होखे बरसात।।

रहबऽ जे ईमान संगे।
खइबऽ हरदम छूछे भात।।

राजनीत के खेल हऽ ई।
छोटका जात बड़का जात।।

घूस के माल बूझाते बा।
छोटका बबुआ नेइखे खात।।

झूठ हम अइसा बोलव के।
पत्नी भी जो जइहें मात।।

काहे चोरी, भ्रस्टाचार।
इहवाँ से अब नइखे जात।।

सासू जी के बतिया से।
लागल बा हमरा आघात।।
मत अझूरा तू उनका से।
मिर्जा जी बाड़े खुरपात।।

कइसे होखी बेड़ा पार

कहवाँ से अब मिली उधार।
कइसे होखी बेड़ा पार।।

नेता हउवन उनकर तऽ।
झूठ के बाटे कारोबार।।

चाहे लम्बा चाहे नाट।
हमरो चाहीं एगो सार।।
बाड़न बबुआ जी बकलोल।
उनका चाँही फटीचर कार।।

नइखे लूट चलाईं कइसे।
बाबा के बाटे तलवार।।

हमरा पर जब आफत आईल।
भगलन छोड़ के हमरा यार।।

लव पीटीशन भइल रीजेक्ट।
दिल से दिल के टूटल तार।।

चाहीं हमरो के सम्मान।
हमरा के मत दी हऽ रार।।

"खोंच" के कविता बा खट मीठ।
खइले बाड़ें तनी अचार।।

चम्चा बताईं

माल का हऽ कमीसन के बबुआ कौनो नेता के चम्चा बताई।
उहे सब से बनी इहवाँ बड़का, भाई के भाई से जे लड़ाई।।

ना दया बा ना कौनो धरम बा, ना सराहे के कौनो करम बा।
बैग उनकर तनी सा गरम बा, उहे लोगवा में इज्जत कमाई।।

पहिले खा खूब जमके उधारे, मोंछ पर ताव दे दे के प्यारे।
उहे भूखे मरी इहवाँ यरवा, माँग के करजा जे जे ना खाई।।

बात बाटे इहे गेयान वाला, आन वाला बड़ा सान वाला।
उन्हे इज्जत से बाहर रहेला, अपना मेहरारू से जे ड़ेराई।।

ले लें बाड़े जे बी॰ ए॰ के डिगरी, उनका पाले जरल बाटे ढिबरी।
जेकर जेबी भरल बाटे मिर्जा उहे जपना बिरला हो जाईं।।

परिसान करत बानी रउआ

अरुआइल कविता सुना सुना परिसान करत बानी रउआ।
ओपर से चिक्कन भोजन के अनुमान करत बानी रउआ।।

करजा ले के बपसी मरलें, ई बात बा बिसराए वाला।
कइसन बूड़बक ओकर भुगतान करत बानी रउआ।।

सब राउर काम करते बानी, पत्नी खातिर मरते बानी।
ऐ सासू जी हमरा काहे अपमान करत बानी रउआ।।

जे पांच बरिस भर अइले हऽ, ना मुहवा कबो देखइले हँऽ।
उनका खातिर दउड़ल जाके मत करत बानी रउआ।।

ऊ लिख के कविता देनी तऽ, रउआ सम्मेलन में गाईं।
एही खातिर उनकर मिर्जा गुन गान करत बानी रउआ।।

हास्य व्यंग्य

ई सम्बंधी लोग

☛ मिर्जा खोंच

आज के सम्बंध एगो **"सूगर कोटेड़ पिल्स"** के अइसन बा। जे मुँह में कुछ देर के लिए तऽ आपन मिठास के असर छोड़ले रहेला बाकिर कुछ देर मुँह में रहला के बाद ओकर मिठास अपने आप खतम हो जाला आ ओह जगे पर अइसन कड़ूआहट आ जाला के मुँह के हालत देखेले बनेला। एह लिए अइसन टिकिया झट देना पानी से निगलल जाला। कहल जाला के **"आदमी एगो समाजिक जीव छ"**। आ ई समाज का हऽ, सम्बंध तऽ घिरल एगो **'वृत'** हऽ। आदमी चाह के भी एकरा से ना निकल पाए। निकले के खातिर चाहे तऽ पागल बने के पड़ी चाहे जोगी बन के जंगल के रास्ता पकड़े के पड़ी। चौपाया जीव आ समाजिक जीव में इहे अन्तर बा के चौपाया के संम्बध महतारी से आगे ना बढ़ेला बाकिर आदमी के सम्बंध के अन्त नइखे। एही से पानी के बुलबुला सिर उठावेला तऽ फूट जाला बाकिर आदमी से सम्बंध बिना सिर उठइले ही टूट जाला। ई सम्बंध अफवाह के कारन टूटेला। यही कारन है कि चौपाया लोग आपन सम्बंध आगे ना बढ़ा सकल। उनका इहाँ आदमी से ज्यादह टूट फूट के अवसर मिलेला। उनका केतना आकरमन के सामना करे के पड़ेला जइसे आदमी के आकरमन, बेरादरी के आकरमन आ दूसर बेरादरी वालन के आकरमन। आ जब आकरमन होखेला तऽ कहीं टूट होखेला तऽ कहीं फूट होखेला। चौपाया कबो आदमी के आपन सम्बंधी ना बनावे बाकिर आदमी जरूरत अइला पर गदहा के भी बाप बना लेला हमरा कहे के मतलब ई बा के आदमी ओही घड़ी पूरा तरीका से आदमी होला जब तक ऊ ई सम्बंधी लोग के बीच पूरा तरीका से जिनिगी गुजारे। काहे के इहे लोगन के किरपा से मरे के भी बा।

ई देखल जाला के कोई ईमानदार आ बड़का पदाधिकारी अपने से कबो केहू से उपहार ना लेला। बाकिर ना ली तऽ काम कइसे चली। एह काम के लिए ऊ आपन मुख्य सम्बंधी के नियुक्त करेला। आ सार से बढ़ के भला मुख्य सम्बंधी अउरी के हो सकेला। काहे के सार आ जीजा के बीच एगो गम्भीर सम्बंध होला। एगो कहावत भी बा के **"सारी खुदाई एक तरफ जोरू के भाई एक तरफ"** कुछ लोगन के जब आपन भविस्य चमकल देखाई देवे लागे ला तऽ ऊ भूत काल से आपन सम्बंध तूड़ लेला। जे गुरू उनका के उड़ल सीखइलें उहे गुरू के ऊ पंख काटल शुरू कर देला। जे सम्बंधी बनावे के लाभ जाने ला ऊ सम्बंध गढ़े मे महारत राखेला। बड़का से बड़का सिद्धान्त वाला लोगन से सम्बंध गढ़ से आपन काम निकाल लेला। उनका मालूम रहे ला के कौन सिद्धान्त वादी अफसर अपना पत्नी से ड़ेराएला आ पत्नी के कमजोरी उनकर नइहर होला। ऊ फटदेना कौनो अइसन रास्ता निकाल लेलन के जौन साहब के पत्नी के नइहर जात होखे। उहे रास्ता के सहारे इ महासय साहब के पत्नी के भाई बन जालन। फिर का, इनकर पाँचों उगरी घी में चल जाला। कुछ लोग सम्बंध करे में आपन जोड़ ना राखे। जहाँ कौनो सम्बंध बराबर भइल देखलन के कैंची लेके ओकरा काटे दउड़लन। भेद खुलला पर जौन उनका साथ होखेला उहे जानत होइहे। गाँव के सम्बंधी जब नगर में आपन उपचार करावे आवेलन तऽ दल बल के साथ आवेलन आ दू दिन में अपना साथे आपन सहरिया सम्बंधी के उपचार कर के चल जालन! सम्बंध निभावे खातिर धन, सरीर, आ मुँह के साथ आगे आगे रहे के पहेला। ए में आपन लाभ के चिन्ता कइनी तऽ गइनी।

सम्बंधी के राउर याद ओ घड़ी आवेला जब राउरा से उनकर तनको भी काम होखे। अगर केहू कॉलेज में पढ़ावेला आ उनका पाले कौनो विषय के कापी आइल बिया त ऽ फेर देखीं ई प्रोफेसर साहब के हालत। जब ले कॉपी जाई ना तबले केहू

ना केहू सम्बंधी नम्बर बढ़ावे के खातिर आवत रही। उनका चाए पिलाई आ नम्बरो बढ़ाई। रउआ अगर कौनो कार्यालय में काम करत होखब तऽ सम्बंधी का होला रउआ समझ में आ गइल होखी। **"रउआ ई जानत जरूरे होखब के कौनो निकट सम्बंधी इतवार के दिन अदबदा के पहुँचेले। अगर कौनो कारन उनकर काम ना भइल तऽ रउआ अपना बारे में चाहे अपना परिवार के बारे में जे ना जानत होख ब ऊहो जान जाएब"** मारे घमंड़ के फूल गइलबा। लाग ऽ ता ओकरा बारे में कौनो जानत नइखे। ओकरा पाले का रहे ओकर दादा के सादी हमार दादा करइले रहलन। आज दू पइसा हो का गइल केहू ओरिया ताकत नइखे, एगो छोट मोट काम नइखे करत।

हमार कहे के मतलब बा कि जब ले दुनिया रही, सम्बंधी से पीछा ना छूटी। केकरा कइसन सम्बंधी मिलता ई ओकर भाग जानो! इ सम्बंधी लोग कबो खुशी ले के आवेला! सुख में रउआ संगे खइहें आ दुखः में खिल्ली उड़इहें! बड़ा मजा रहे, अब पड़ल बा तऽ भुगतस! जे भी हो बाकिर सम्बंधी के बिना कौनो काम ना होखी। जे दिन सम्बंध खतम भईल समझी ओ दिन चौपाया आ समाजिक जानवर मे कौनो अन्तर ना रही।

हास्य व्यंग्य

मिर्जा खोंच

उहे सुन लऽ आगे जाई

जेकरा पाले बाटे पाई।
उहे सुन लऽ आगे जाई।।
प्रेम के बतिया फिसल जाता।
उनका दिल पर जमल बा काई।।
साँसत में अब जान पड़ल बा।
ऐने सासू ओने माई।।
नैन के तीर भइल बा भोथर।
लागी तऽ टेटनस हो जाई।।
जब ले चम्चा ना बन ब ऽ तू।
तब ले भाग कहाँ फरिआई।।
बाप के सारा माल खतम बा।
कब ले केहू बइठ के खाई।।
पहिले करजा ले के खा लऽ।
बाद में इयरवा देखल जाई।।
जेना खाई माल उपर के।
बाद में मिर्जा ऊ पछताई।।

बियाह मत करि हऽ

आपन जिनगी तबाह मत करि हऽ।
प्यार करि हऽ बियाह मत करि हऽ।।
आदमी से तू नेता बन जई बऽ।
राजनीति के चाह मत करि हऽ।।
ऊ कमाएले आ त खाए लऽ।
मौगी मारे तऽ आह मत करि हऽ।।
ऊ सरापे तऽ तोहरा पड़ जाए।
अइसन भारी गुनाह मत करि हऽ।।
मित्र तोहर पढ़े कविता तऽ।
निमनो लागे तऽ वाह मत करि हऽ।।
के हू आगे बढ़े जे तोहरा से।
सुन लऽ ओकरा से ड़ाह मत करि हऽ।।
उहाँ फैसन के खेल बा मिर्जा।
ओने आपन निगाह मत करि हऽ।।

हास्य व्यंग्य

बेकारी से लाभ

☛ मिर्जा खोंच

रउआ लोगन सीरसक पढ़ के ई मत कहब के मिर्जा पगला गइल बा। कहाँ तऽ होखे के चाहीं के बेकारी के अवगुन, बेकारी के समस्या, आ खोंच कहत बाड़न के बेकारी से लाभ! रउआ लोगन पहिले हमार लेख पढ़ी तब कौनो फैसला करब। ई बात तऽ एक दम साँच बा के दुनिया में कौनो प्रकार के क्रान्ति भइल उ सब हम बेकारन के चलते भइल! अगर आवश्यकता अविस्कार की जननी हऽ, अविस्कार के पिता हम बेकार सब बानी! वैज्ञानिक, साहित्यिक, समाजिक आ राजनैतिक, कौनो प्रकार के क्रान्ति के पाछे हम बेकारन के हाथ बा। ई बेकारी देस के बदन पर करिया धब्बा नइखे, ई देस के गाल पर एगो करिया तिल बा जे देस के सुन्दरता बढ़ा देला। हम बेकार चाय खाना के जान, अफवाह कुली के सान, राजनीति के आन आ अनर्गल जुटावल भीड़ के पहचान हईं। हमनी के बदन अगर कौनो पार्क में रहेला तऽ दिल नियूयार्क में रहेला।

रचना, क्रान्ति आ अविस्कार के लिए समय चाहीं आ उपर वाला हम बेकारन के पूरा समय उपलब्ध करइलेबा। एगो नोकरीवाला चाहे कौनो प्रकार के व्यवसाई के इतना समय कहाँ बा के ऊ अपना दुनिया से बाहर आए। काम से जइसे छुट्टि मिलेला ऊ अपना बाल बच्चा में फँस जाला। अब रउअे कहीं के एकरा बाद क्रान्ति करे के उनका पाले समय कहाँ बचेला। अगर उ नौकरी वाला भइल तऽ जौन समय बचल ओमे ऊपर वाला आमदनी के बन्दर बाँट, आ बनिया होखी तऽ प्याज लहसुन के गाँठ में समय चल जाला। तब राउअे सोंची का कविता ऊ कर पाई चाहे कौनो लेख ऊ लिखियो पाई! केकर आलोचना करे के बा कौन कविता में चाहे लेख में मीन मेख निकाले के बा एकरा लिए समय चाहीं आ ओकरा पाले समय नईखे। एही से ई बात साफ भइल के काली दास, कबीर दास, तुलसी दास, प्रेमचन्द, गालिब चाहे वर्डस वर्थ ई कुली लोग जन्म से ही बेकार रहे चाहे लिखे के चलते नौकरी से बर्खास्त भइल होखी लोग। चाहे लिखते लिखते बेकार हो गइल लोग आ बेकारन के पाले समय के छोड़ के औरी कुछ ना होखेला। जब समय बा तऽ रचना होवे करी।

क्रान्तिकारी वैज्ञानिक सर आइजक नियुटन के पाले प्रयाप्त मात्रा में समय रहे तभे ऊ सेब के खेत में खूब घूमस आ जब थक जास तऽ ओहे जगे सूते लागस। आ सेब जब गिरे तऽ ऊ हड़बड़ा के उठ जास! लगलन सोचे के सेब नीचे काहे गिरल ऊपर काहे ना गइल आ ईहे सोच विज्ञान के दुनिया में एगो हंगामा पैदा कर देलस। ऐसे ई स्पस्ट हो गइल के विज्ञान में जेतना अविस्कार भइल बा ओकर सेहरा हम बेकारन के सिर बा।

मोहब्बत के इम्तहान उहे पास करी जेकरा पाले समय बा। जे बेकार होखे घर में कॉलेज रोज परेमिका के पीछा करल, उनका खिड़की के नीचे सीटी बजावल, परेम-पत्र लिखल, परेम संवाद याद करल कम दिल गुरदा वाला के काम नइखे। एगो परेमी जब तक बेकार ना होखे आ ओकरा पाले सूअर के करेजा ना होखे ओ घड़ी तक ऊ पक्का प्रेमी ना हो सकेला। लैला-मजनूं, हीर रांझा, सोहनी महिवाल, रोमियो जूलियट बेकारे नू रहलन लोग तबे ऊ लोग प्रेम के क्रिकेट में चौका छक्का लगा के एगो किर्तीमान स्थापित कइल लोग। जहाँ समाज बा उहाँ राजनीति बा औरी जहाँ राजनीति बा तऽ समाज में तूड़ फूड़ हो बे करी! समाजिक आ राजनैतिक क्रान्ति के दूगो अगुआ बाड़े, चन्दा आ नेता। एगो बेकार ठीक तरे चन्दा वसूल कर सकेला आ एगो बेकार रहे वाला अच्छा नेता बन सकेला। ई बेकार जब समाज के लिए आपन समय नस्ट करेला तऽ समाज सुधारक कहा ला। भले समाज नस्ट हो जाए बाकिर सुधारक जी अपना नाक पर माछी ना बइठे दीहें। ऊ खाली विपक्ष पर दोस लगइहें **'आ विपक्ष वाल सत्ता पक्ष पर दोष लगाई'**। ई दूनू के बीच में जनता पीसल जाई। जब इहे सुधारक लोग पूरा राजनीति के ओरी मुड़े ला तऽ ऊ रउआ लोगन के आपन जात बता देला। आ रउआ लोग के तब मालूम होला के रउआ कौन जात के हईं। इहे लोग रउआ में धारमिक उन्माद पैदा करेला जेकरा चलते राउर धार्मिक आस्था भले गडबड़ा जाए बाकिर धार्मिक सुदृढ़ हो जाला।

ऐ बेकारन के हीन भाव से देखे वाला लोग तनी होस में आव ऽ औरी हमनी के इज्जत बढ़ाव ऽ लोग तोहर इज्जत भले चल जाए बाद में हमनी के ओकरा संभाल लेवल जाई! एही में भलाई बा।

जय बेकार - जय सरकार

हास्य व्यंग्य

दिल आपन प्रीत पराई

मिर्जा खोंच

दिल आपन आ बाटे प्रीत पराई हो।
हमरा से ई ना होखी रघुराई हो।।
हाल बताई हम का आपन, भाई हो।
मरले बाड़ी मार बड़ी भौजाई हो।।
पोरे पोर दुखाएला तब देहिया के।
बहेला पापी जब जब ई पुरवाई हो।।
इज्जत नईखे पास तऽ जा के का होखी।
बन कर दऽ ससुरारी आवा जाई हो।।
हाथ जोड़ के पहिले वोटवा ले लेलन।
बाद में काहे बन गइलन हरजाई हो।।
मँहगाई के मार पड़ल बा अइसन के।
होरी के पकवान कहाँ से आई हो।।
जब ओकरा **"आकासी"** चढ़ जाला कबहूँ।
बिरहा राग में फेंट के फगुआ गाई हो।।
उनकर चेहरा देख के जे भी मस्त रही।
पक्का बाटे ऊ आगे पछताई हो।।
जेकरा खातिर जेल में गइनी दू बेरी।
उहे काहे हमारा से कोहनाई हो।।
"खोंच" कवि बड़का बाड़न बाकिर उनका।
कविता में खाली बा हवा हवाई हो।।

घट गइल बा

हमार बैंक बैलेंस घट गइल बा।
कनेकसन सब जगह से कट गइल बा।।
ई इसकूटर, फिरीज, रंगीन टी.वी।
बड़ा सस्ता में लइका पट गइल बा।।
बनी अब एकता के खीर कइसे।
नेह के दूध तनका फट गइल बा।।
मिली ओकर इहाँ पूड़ी जलेबी।
जे सच्चाई से तनिका हट गइल बा।।
उहे पक्का कवि हमरा बुझाला।
जे सम्मेलन के आगे डट गइल बा।।
तनी देखीं तऽ आई लभ यू के गाना।
इहाँ के बच्चा-बच्चा रट गइल बा।।
मिलल तनिको ना ओकरा जे बा पीड़ित।
खबर बा माल सारा बँट गइल बा।।
उहे पक्का मरद बाटे, ए **'मिरजा'**।
जे ससुरारी में आके डट गइल बा।।

- पूर्वांकुर -
जनवरी-मार्च 2009 से साभार

हास्य व्यंग्य

हास्य गज़ल

ईह बाटे हाल बराबर
होखेला हड़ताल बराबर।।

हमरा के तू का समझे लऽ।
घर के मुरगी दाल बराबर।।

जाने कइसे दो हो जाला।
उनकर गोटी लाल बराबर।।

कौनो ना कौनो फँस जाई।
फेंक रे यरवा जाल बराबर।।

हमरा कविता के मत पूछऽ।
गाएलन कौवाल बराबर।।

ओने से जे बेलना आइल।
बच गइनी हम बाल बराबर।।

का हो मिरजा का किस्सा का।
आवे ला मिस कॉल बराबर।।

हास्य व्यंग्य

बाराती

☛ मिर्जा खोंच

जे तरे बिना जर्दा के पान कौनो मानी नइखे राखत ओही तरे बिना बराती के शादी के कौनो मतलब ना हऽ। जइसे सारी जिनगी के एगो जरूरत होला ओही तरे बराती उ जरूरत के नाव होखेला। बाराती सादी के तन-मन-धन होला। कहे के मतलब इ बा के बराती तीनो तरे से लाभ उठावेला। बराती तीन कीसिम के होला। एगो ऊ जेकरा कार्ड आ हजाम भेज के बोलावल जाला। दूसर ऊ जे केहु के संगे लाग जाए आ तिसरका ऊ जे के अपने से एह लिए टपक पड़े के हो सकेला उनका कार्ड भेजल गइल होखे आ उनका ना मिलल होखे। एगो बाराती खाये-पिये के दृष्टि से तीन आदमी के बराबर हो सकेला। जबे एगो साधारण आदमी बाराती के रूप में आवे तऽ ओकरा से आदमियत खतम हो जाला आ तीन दिन के बाद आवेला। समधी जी दहेज बिटोरे जाले आ बाराती खाये जाला। लेकिन कुछ अइसन भी बात बाटे जेकरा छुपा के राखल जाला। बाराती के दुल्हिन से का मतलब ऊ गोर होंखे चाहे करिया! जेकरा पाले पड़ी ऊ समझी! बारात में जाए के कईगो अर्थ होला। पहिलका बात तऽ ई बा के बारात में जाके आपन पाचन के ठीक करे के औरी दूसर काम एगो बढ़िया अवसर के खोजे के। औरी मतलब होला लेकिन ओके इहाँ बतावल जरूरी नइखे। हमरा इ जानकारी ना रहे बाकिर एक जगे हमहूँ बाराती बनके गइनी तऽ पता लागल! बारात के वापसी के समय रहे बस में सारा बाराती लोग अपना समान के साथ अपना-अपना जगे पर कब्जा जमा कर बइठल रहें! लड़की वाला लोग रोए-धोए वाला रसम निभावत रहे! केहू तरे जब सारा लड़की वाला लोग रो चूकल तऽ एगो नया मोसीबत सामने आ गइल! लड़की वाला के ओरी से भाँति-भाँति के आवाज आवे लागल! हमार दिल डूबे लागल! भगवान जाने आगे का होई। "मालिक - बड़का दरी नइखे लउकत। भइया! फूल वाला चादर देखाइ नइखे पड़त। चाचा हो! कोठरिया में से वाल्टी, गीलास आ जग गाएब बा। एगो जोरदार आवाज आइल पकड़ो। बाकिर बस अइसन भागल के पकड़ा गइला पर का होई पता नइखे? हमरा दावा बा कि दुनिया क पहिलका मीनमेख निकाले वाला कौनो बाराती होखी। आलोचना के पहिलका शिकार लड़की वाला हियाँ के मौसम होला जे बस से उतरते-उतरते बाराती लोगन के चाय-पानी के जरूरत पड़ जाला। दूसरका शिकार इंतजाम करे वाला होखेला जे चद्दर आ तकिया के ठीक इंतजाम ना करे! तीसरका मार रसोई बनाए वाला पर पड़ेला जे तरकारी तऽ गला देला बाकिर रस कच्चा रह जाला। आलोचना के नजर लड़का के बाप पर होला जे बस में चाय बीड़ी पान के इन्तजाम ना करे! अगर आलोचना ना होखे तऽ बूझी के बारात के रंग फीका पड़ जाए। राजनीती के कीड़ा भी बाराती के काटेला! आ ऊ कीड़ा लड़का के बाप के लिस्ट में उनका नाम ना होखे पर भी नाम लिखवा देला। भइया, बेटवा के शादी में हमरा के मत भूली हऽ! चाचा हो, हमरा लिए कौनो सेवा हो तऽ कहे से मत हीचकिचइहऽ। ए तरे के टालन वाक्य बा जे बाराती में आपन नाम लिखावे में मदद करेला। रउआ देखनी के बाराती एगो छोट शब्द होखेला पर भी अपना में एगो विराट मतलब छूपइले बा बाराती बनला में एकेगो नुकसान बा ऊ हऽ पाचन कभो-कभो गड़बड़ हो जाला ए लिए के दहेज के लेन-देन के असर भोजन पर खूब पड़ेला।

भोजपुरी लिखीं

पढ़ी

लिखीं बोलीं।

मंजर सुलतान के कलम से

आज से करीब 40 साल पहले यहाँ की अदबी फिज़ा में एक खुशगवार तबदीली आयी थी और तकरीबन एक दर्जन नए लिखने वालों काफ़िला बिसाते अदब पर नमुदार हुआ था जिन की सोच एक नए क्षितिज़ उफ़क का पता दे रही थी जिन की शायरी एक खुशगवार हवा के झोंक की तरह एवाने अदब के दरीचों से दाखिल होकर मायुसिओं और नामुरादीयों को हौसला बख़्श रही थी यह तबलीगी यहाँ के पूर्व मसनदनशीन कलमकारों की आँख की किरकरी बन गयी थी। ज़माना बदल रहा था बदलते जमाने की सच्ची एवं खुरदुरी मासूम, बेलौस इन आवाज़ों को दवाने की भरपूर कोशिश भी हो रही थी नतीजा साफ था, टकराव की सूरत पैदा हुयी और यहाँ का अदबी माहौल दो हिस्सों में साफ साफ बट गया – एक ग्रुप के पास सब कुछ था दूसरे के पास कुछ नहीं, अगर कुछ था तो वह जूनून था कुछ कर दिखाने का, फ़न की बारिकीयों, जबान की मिज़ाज़ सनाशी, खुब पढ़ने और लिखने का शौक मेहनत बेकार नहीं गयी। धीरे धीरे धुन्ध छटती गयी असमान साफ होता चला गया काफ़िले कुछ ऐसे थे जो रास्तों की बेशुमार परिशानियों, विपरीत परिस्थितियों में भी सफर करते रहे और आज तक रहे हैं। इन जाँबाज मुसाफिरों की हिम्मत को सलाम करते हुए इस समय में सिर्फ एक मुसाफिर, एक कलमकार, एक शायर का जिक्र करना चाहूँगा जिसे मैं ही नहीं पूरा साहित्य जगत मिर्ज़ा खोंच के नाम से जानता है। इन का पूरा नाम **मीर मोहमिद गनी मिर्ज़ा खोंच** है आज वह उम्र के 65 साल में हैं लेकिन हनुमान जी की तरह कवाँरे हैं, मिर्जा दोस्तों के दोस्त, दुशमनों के दोस्त हैं उनके दोस्तों का हलका बहुत बड़ा है जिस में सभी जाति धर्म के लोग हैं। दूसरे शब्दों में अगर कहा जाए तो मिर्जा अपने शहर में सब से अधिक लोकप्रिय कलमकार हैं दरअसल वह मानव धर्म पर विश्वास रखने वाले व्यक्ति हैं, उनकी नजर में अल्लाह–रबबुल आलमीन है। ईश्वर काएनात के जर्रे में बसा हुआ है इंजील की रौशनी फैलने का जब हुक्म दिया गया उस की हदें मोकर्रर नहीं की गयीं – वह एक बेहद दर्दमंद दिल रखते हैं दूसरों के दुख सुख में बराबर के शरीक होते हैं। एक बड़ी शिक्षा संस्था से जुड़े होने के कारण वह ढेर सारे छात्रों के आयडियल भी हैं जहाँ तक हैसीयत से जो ख्याति दर्ज की है वह कम लोगों के नसीब में होती है उन्होंने उर्दू, हिन्दी एवं भोजपुरी में खूब लिखा। बड़े–बड़े मुशायरे, कवि–सम्मेलन पढ़ते रहे। विभिन्न शहरों में इस इलाका का झंडा बुलन्द किया। अपनी शायरी, अपनी कविताओं, अपनी सलाहियतों का लोहा मनवाया, इस अंक में शामिल उनकी कविताएं पढ़िये मेरी बात की तसदीक आप खुद करेंगे। जहाँ तक मजबून निगारी का प्रश्न है आप ने इन्शाइया के मैदान में बड़े कारनामें अंजाम दिए हैं। आप के इनशाइये देश के बड़े से बड़े रेसाला एवं अख्बारात में प्रकाशित हुए और हास्य व्यंग्य के जगत में दिग्गजों, मुजतबा हुसैन, नरेन्द्र लोथर, युसुफ नाजिम, कन्हैया लाल कपूर जैसे लोगों की रचनाओं के साथ आप के मजामीन भी प्रकाशित होते रहें हैं। मिर्जा ने अपनी मेहनत और सलाहियतों के बल पर शोहरत की बुलंदी का वह मकाम हासिल किया जहाँ मुझ जैसा आदमी मिर्जा को अपना दोस्त बताते हुए गर्व महसूस करता है। खुदा करे कि **"मोहमिद गनी" हज़ार बरस हमारे साथ रहे कहकहे लुटाता रहे"**।।

(लेखक उर्दू भाषा के बहुचर्चित कवि हवन)

भोजपुरी लिखीं

पढ़ी

लिखीं बोलीं।

हास्य व्यंग्य

आपन दाल गलाईं

मिर्जा खोंच

पहिले तनिका माल चटाईं।
बाद में आपन दाल गलाईं।।
कुर्सी छूटल, चमचा रूठल।
कईसन बाटे हाल बताईं।।
साँच बात त साँचे होला।
केतनो रउआ गाल बजाईं।।
के रउआ के रोकले बाटे।
चमचा बन के माल कमाईं।।
राजनीति में आवे खातिर।
देह पर मोटका खाल जमाईं।।
मिर्जा कब सम्मानित होखिहें
जल्दी उनके साल ओढ़ाई।।

– पुर्वांकुर –
अप्रैल–जून 2008 से साभार

आपन कविता..

मिर्जा खोंच

आपन कविता सुनावऽ तनी।
उनका घर से भगावऽ तनी।।
आपन पाटी के सासन रही।
रोज दंगा करावऽ तनी।।
फेरु हमरे के ऊ वोट दी।
अइसन पट्टी पढ़ावऽ तनी।।
देखीं हिम्मत के ससुरा में हम।
दाल आपन गलावऽ तनी।।
अब बूढ़ौती में इज्जत मिली।
ढ़ेर पइसा कमावऽ तनी।।

दोहे

मिर्जा खोंच

भाई के धन मार के जे केहू भी खाई।
खोंच मियाँ के दावा बा, सीधे सरग जाई।1।

जे तोहरा चाँटा मारे, ओकरा मार ऽ भाला।
ऊ हो साला का समझी, पड़ल केहू से पाला।2।

माई के पहिले सास के, रोजे करीं सलाम।
उनका बेटी के चलते, भइनी हम तऽ गुलाम।3।

रातो दिन पढ़ते रहे, बाकिर भइल ना पास।
भइल पैरवी तब जाके जागल ओकर आस।4।

खोंच मियाँ ऊ मर गइल माँगल जे सरमाए।
ओकर जीवन सफल भइल, जे माँग माँग के खाए।5।

अपना पर जब दुख पड़े, ओकरा सब में बाँटऽ।
सुख में जे माँगे आए ओकरा के तू ड़ाँटऽ।6।

दारू पी के मत आई, बेटा भइल जवान।
जब ऊ पीए लागी, तऽ काट ली तोहर कान।7।

माल हऽ बबुआ मेहनत के, मत झाडऽ कानून।
घूस के मतलब ई बाटे, तरकारी पर नून।8।

आपन बड़ाई हर घड़ी, हरदम बड़का बोल।
तब जाके ए दुनिया में, लागी तोहर मोल।9।

लूट के इहवाँ छूट बा, लूट सके तऽ लूट।
तब जाके भगवान के, मारऽ तनी सैलूट।10।

मिर्ज़ा खोंच : एक बहुचर्चित व्यक्तित्व

☛ एम॰ एम॰ वफ़ा

मीर मोहामिद ग़नी मिर्ज़ा खोंच साहित्य जगत की एक ऐसी बहुचर्चित व्यक्त्वि का नाम है। जिस पर हमें नाज़ है। कम समय काल में साहित्य रचना का बड़ा काम करने वाले मिर्ज़ा खोंच का जीवन शुरू ही से अभाव ग्रस्त रहा है। लेकिन अभाव के दर्द को न तो उन्हों ने अपने दिन चर्या पर हावी होने दिया है और न अपने साहित्य पर। निरंतर बिमारी से पीड़ित रहने के बावजूद उनहों ने जीवन की हर चुनौती का सामना बड़े उल्लास के साथ किया है। हमेशा हंसते रहने, दूसरे को हँसाते रहना, बातचीत में हास्य और व्यंग्य का पहलू निकाल कर मजलिस को गुलज़ार किये रहना उनकी आदत ही नहीं शायद उनके जीवन का उद्देश्य भी है। मिर्ज़ा खोंच ने शादी नहीं की। फलतः अपने बाल बच्चों भी नहीं हैं। बजाहिर उनका परिवार उनकी ज़ात तक सीमित है। लेकिन देखने में यह आता है कि जैसे सारा शहर ही उनका परिवार है। हर किसी के दुख से दुखी और हर किसी की खुशी से खुश हो जाना उनकी खूबी है। आज मेरे घर, कल आपके घर परसों, तिसरे के यहां पहुँच जाना। बच्चों में टाफियाँ बांटना उनका होमबर्क देखना मामूला रहा हैं। बच्चों के साथ बच्चों की तरह घुल मिल कर उन्हें अपना बना लेने का हुनर मिर्ज़ा खोंच को आता है। कभी कभी हमें ईर्ष्या भी होती है कि यह हमारे अपने बच्चे हम से इतना खुल कर क्यों नहीं मिलते हैं। जितना अपने खोंच अंकल से मिलते हैं। मिर्ज़ा खोंच ने सारे जहां के दर्द को अपना दर्द बना लिया है। किसी के यहां शादी-ब्याह हो, मरनी हरनी हो, छोटी गोष्ठी हो, बड़ा मुशायरा हो, आप वहां अपनी सार्थक उपस्थिति जरूर दर्ज कराते हैं। आपका हृदय मौंजें मारता हुआ वह विशाल सागर है जहां सारी नदियां आकर विलिन हो जाती हैं।

मिर्ज़ा खोंच की रंगा-रंग तबियत ने कभी भी उन्हें संजिदा साहित्य की ओर आकृष्ट नहीं किया। जब वह जीवन के किसी मोड़ पर संजिदा नहीं रहे तो भला साहित्य-सृजन में वह संजिदगी कहां से लाते। आप गद्य के नाम पर ललित निबंध लिखते हैं। ऐसे निबंध जिसमें जीवन की सच्चाई तो होती है लेकिन सच्चाई की कड़वाहट नहीं होती है। हास्य के लोट पोट में यह कडुवाहट कहीं लुप्त हो जाती है। आपको शब्दों से खेलने का हुनर आता है, बात से बात पैदा करने का सलीका भी खूब आता है। मिर्ज़ा खोंच ने उर्दू, हिन्दी, भोजपुरी तीनों भाषाओं में शायरी की है। और खूब शायरी की है। यह कहना मुश्किल है कि किस भाषा में उनकी शायरी अधिक उत्कृष्ट हुयी है। उन्हों ने शायरी भी की है तो हास्य-व्यंग्य की शायरी की है। हास्य-व्यंग्य में भी हास्य का पलड़ा भारी होता है। व्यंग्य की हैसियत मौन हो जाती है। व्यंग्य जीवन की नाहमगारियों को दर्शाता है तो हास्य उबड़-खाबड़ रास्ते को समतल बना देता है। व्यंग्य से तलखी बढती हो तो उनकी हास्य विद्या इस तलखी को जायकादार बना देती है। ऐसा नहीं है कि मिर्ज़ा खोंच गहरे संजिदा चिंतन की शायरी नहीं कर सकते हैं। उनके पास चिंतन है, भावनाऐ हैं, भाषा पर पकड़ है। वह हास्य व्यंग्य से अलग हटकर भी शायरी कर सकते हैं। लेकिन उन्होंने अपने जीवन की महरूमियों से दूसरों को खुश करने का सबक सिखा है। अपने आँसुओं से दूसरों की मुस्कुराहट में ढाल देना चाहते हैं। और यह काम हास्य-व्यंग्य की शायरी के अलावा कहीं और हो ही नहीं सकता है। हमारी कामनायें दुआयें सब मिर्ज़ा खोंच के साथ हैं। उपर वाला, उन्हें लम्बी उम्र के साथ स्वास्थ्य भी दे कि वह जम कर साहित्य-सृजन करें। और लोगों में मुस्कुराहट तकसीम करते रहें और महफ़िलों को गुलज़ार करें।

कौनो गारन्टी बा का

☛ मिर्जा खोंच

केकरा से नैना लड़ी, कौनो गारन्टी बा का।
केतना ऊपर से पड़ी, कौनो गारन्टी बा का।।

ई हऽ सम्मेलन कवि के, दउड़ के मत जा उहाँ।
चाए बिस्कुट हर घड़ी, कौनो गारन्टी बा का।।

ऊ हऽ नेता कइसे कह दीं, साँच बोली हर घड़ी।
ना करी धोखाधड़ी, कौनो गारन्टी बा का।।

खूब बा ससुराल पइसा वाला बाकिर यार जी।
तोहरा पर पइसा झड़ी, कौनो गारन्टी बा का।।

बाटे ऊ नीमन पड़ोसी बाकिर ऊ हमरा खेलाफ।
एगो दूगो ना जड़ी, कौनो गारन्टी बा का।।

करजा दे वे के ई आदत कइसे कह दीं ना करी।
खोंच के खटिया खड़ी, कौनो गारन्टी बा का।।

भोजपुरी में व्यंग के माहिर खिलाड़ी
– मिर्जा खोंच –

☛ ज्ञानेश्वर गुंजन
(ब्यूरो चीफ) भोजपुरिया पुकार
प॰ चम्पारण, बेतिया

उर्दू साहित्य के उ शायर जे भोजपुरी व्यंग के भोथर धार के पिजा के चोख अउर चमकदार बना दिहनी। पश्चिम चम्पारण के भोजपुरी व्यंग के प्रतिनिधि रचनाकारन में इहाँ के विशिष्ठ स्थान बा। इहाँ के भोजपुरी रचनन में दमगर अउर मजिगर भोजपुरी व्यंग के रैन हिराव बा। इहाँ के अपना अनुभव के रोचक ढंग से हास्य–व्यंग में दरले बानी। खोंच साहब के भोजपुरी गद्य अउर पद्य दुनू पर बराबर अधिकार बा। इहाँ के उद्देश्यपूर्ण व्यंग रचना हमनी जइसन युवा साहित्यकारन खातिर राम–बाण बाटे। संयुक्त परिवार के नेह–नाता में टूटन आ दरार के इहाँ से बेसी शायद ही केहू जानी।

खोंच साहब के पूरा नाम **मीर मोहामिद गनी मिर्जा खोंच** बाटे। इहाँ के आजीवन कुँआर रहि के भोजपुरी अउर उर्दू साहित्य के सेवा क रहल बानी। इहाँ के जन्म 01.09.1952 [1 सितम्बर उन्नीस सौ बावन] में भइल बा। इहाँ के प्राथमिक शिक्षा विपिन मिडिल स्कूल तथा हाई स्कूल के शिक्षा राज हाई स्कूल में भइल। एम. जे. के. कॉलेज से अर्थशास्त्र अउर उर्दू में स्नातक कइनी। वर्तमान समय में जी. एम. कॉलेज में क्लर्क के पोस्ट पर कार्यरत बानी। खोंच साहब के साहित्य यात्रा के शुरूआत 1971 से भइल जब **'द्वीप प्रभा'** में पहिला रचना प्रकाशित भईल। खोंच साहब आपन उस्ताद शायर एम॰ एम॰ वफ़ा तथा डॉ॰ भगवान दास उर्फ शादाब ललित के मानी ले। 1993 में कलामे शायर के हैसियत से आकाशवाणी पटना में पहिला बेरि ग़ज़ल पढ़नी। साहित्यकार लोग के संस्मरण, जीवनी अउर आपबीती पढ़ल इहाँ के पसंद करी ले। रजा नकवी वाही, क्रेक बेतियावी के साथे मिलके मिर्जा खोंच साहब एगो काव्य संकलन निकलनी जेकर नाम बा – **'टूटे हुए चेहरे'** (हिन्दी)।

'तनी हमरा बारे में' आत्म–कथ्य में इहाँ के का कहऽतानी इहे के जुबानी रउरा सभे सुनी – **"हम के हई? आ का हई? हमरा तनिको पता नइखे। अगर हमरा पाले अपना के पहचाने के ताकत रहित त हम ऊ न बनती जे बानी। जब हम पैदा भईनी त ऽ बिना नाम के कइसे रहती। महतारी बाप हमार नाम मीर मोहामिद गनी रखल। आ जब हम बड भईनी आ कुछ कुछ तुकबंदी करे लगनी त ऽ एक जने जे हमरा से देह से, दिमाग से आ आपन कविता से बड़ रहले हमरा में का जाने का देखलन के ई दुनिया में हमार नाम मिर्जा खोंच रख देनी। हम नया–नया कवि भईल रहनी ऐ लिए रख लेनी। बाकिर बाद में हम साचो कवि हो जाइब आ साहित्य के दुनिया में हमार नाम मिर्जा खोंच हो जाई पता ना रहे। कहल जाला के नामों सोच–समझ के राखे के चाही। ना तऽ जइसन नाम ओइसन काम वाला बात हो जाई। जे तरे हमरा साथे भइल। जब दिमाग पगलाला कविता करेनी आ जब दिमाग अउरी पगलाला तऽ लेख लिखा जाला।**

हमरा ई समझ में आइल के कविता का हऽ एकरा छोड़ देवे के चाही। हमार कईगो रचना छप गईल। हमरा पढास से जादे छपास के भूत धऽ लेलस। हमार आपन नाम का हऽ लोग के पता नइखे बाकिर मिर्जा खोंच सेपटिक घाव के जइसन पसरे लागला आ जहाँ तक छपे के सवाल बा तऽ हम अमुक–अमुक पत्रिका के छोड़ के बाकिर सब मुख मुख पत्रिका में छपल बानी। अबहिनो मसहूर से मसहूर पत्रिका में छपे के बाकी बानी। हमरा बरबाद करला में दुसमन से ज्यादे मित्र के हाथ बा। हम नाम से लिए ये रहल बानी के रउओ लोग ओ लोग से बचत रही। ऊ लोग के नाम हऽ सीरी चतुरभुज मिसिर, सीरी ज्ञानदेव त्रिपाठी, सीरी सुरेश गुप्त, सीरी डॉ॰ गोरख प्रसाद 'मस्ताना', अनिल 'अनल' आ सीरी सतीश राय 'अंजान' ई लोगन से बच के रहीं ना तऽ रउओ कवि बन जायब। केहू तरे

अउर

बी. ए. पास कईनी। कविता के चक्कर में कवनो नीमन नौकरी ना लागल। इहे कुफती बाबूजी अहमद गनी मर गईनी। हमरा एगो वित रहिल कॉलेज में सहायक लिपिक के नौकरी मिल गईल। उपर वाला के कृपा से एगो पइयो ना देवे के परल। आज जे कुछ बानी जवन मित्र लोग के नाम ऊपर धईनी हऽ उनकरे बदउलत। उ लोग हमरा कविता में खाद-पानी डाले के काम कईलन। ई कविता के चलते बियाहो ना भइल। ना तऽ हमार रोज का हाल होईत ई कवि लोग बताई। अउरी तऽ अउरी हमरा आजूकाल्ह निकल एगो संतोष नाम के भतीजा भेंटा गईलन। उ तऽ हमरा पर साफे 'कोट मारसल' लगा देले बा। चाचा खूब लिखी आ आपन सँउसे अगला प दिला रचना हमरा के दे दी। हम राउर कलेकशन निकालेब। एतना सुनऽ के तऽ हमार होस हऽ गईल। काहे के हम आपन रचना एने लिखनी ओने बिगनी बाकिर ओकरा डर से हमरा जमा करे के पड़ल। रउआ जे पढ़ रह बानी ओकरे हुकुम से बा। ली पढ़ी आ आपन सिर धूनी।"

(मिर्जा खोंच)

ई मिर्जा साहब के विचार उहाँ के भीतर के टीस आ दरद के व्यंगात्मक लहजा बा। समाज में व्याप्त घुसखोरी, भ्रष्ट्रचार, जाहिलपन, दहेज अउर छुदर राजनीति पर आपन रचना के माध्यम से गहिरा चोट कईले बानी जेकर चटकदार रंग से इहाँ के ग़ज़ल के कईगो शेर रंगा गईल बा -

[1] पहिले तनिका माल चटाई।
बाद में आपन दाल गलाई।।

[2] साँच बात तऽ साँचे होला।
केतनो रउआ गाल बजाई।।

[3] के रउआ के रोकले बाटे।
चमचा बन के माल कमाई।।

[4] बनी एकता के खीर कइसे।
नेह के दूध फट गइल बा।

[5] मिली ओकरे इहाँ पूड़ी जलेबी।
जे सच्चाई से तनिका हऽ गइल बा।।
मिलल तनिको ना ओकरा जे बा पीडित।
खबर बा माल सारा बट गइल बा।।

[6] राजनीति के जोर भइल बा।
करिया कूच कूच गोर भइल बा।।

[7] जबसे कुर्सी हाथ में आइल।
उ पक्का मुँहजोर भइल बा।।

[8] उनकरा के भगवान बचावस
जेकर रक्षक चोर भइल बा।।

[9] जेकर ओमें हिस्सो बाटे।
उहे आउट डोर भईल बा।।

[10] मंहगाई के चढल बा चाय।
सभे चिल्लाता बाप रे बाप।।

[11] चारू ओरिया झगड़ा-झुगड़ी।
कहवा बा उ मेल-मिलाप।।

[12] दिन में इल्लू-इल्लू गायब, तोहरा का।
पोल पर चढ़िके फ्यूज़ उड़ायब, तोहरा का।।

[13] तू हमरा से के हउव पूछे वाला।
भाई के सभ माल पचायब, तोहरा का।।

[14] ना पढ़नी तऽ ना पढ़नी चिंता, कइसन।
बनि के नेता गाल बजायब, तोहरा का।।

[15] रोज कमीशन खानी सुन लऽ बबुआ।
भले बाद में पकड़ल जायब, तोहार का।।

[16] महतारी बपसी के पाछे रखिके हम।
सास-ससुर के गोड़ दबाएब, तोहरऽ का।।

इहाँ के भोजपुरी ग़ज़ल के हरेक शेर में व्यंग के धार केतना तेज बा ऊपर के शेर सब से पता चल जात बाटे। सामाजिक बिडम्बना पर इहाँ के सोनार खानी ना लोहार के तरे चोट कहले बानी। मिर्जा खोंच साहब भोजपुरी में खाली ग़ज़ल आ हज़ल ही नइखी लिखले बलुक भोजपुरी गद्य के भी इहाँ के अपना लेख, कहानी व्यंग से समृद्ध करले बानी। जइसे दामाद, बाराती, गाँधी जी के चउया बाना, मुहल्ला का भूगोल, जूता-पुराण, इत्यादि। आजुले मौका-मोनासिब पर लिखते रहीले। भगवान से हमार करजोर निहोरा बा कि मिर्जा खोंच साहब के दीर्घायु करी ताकि पश्चिमी चम्पारण में भोजपुरी तथा उर्दू साहित्य के हास्य-व्यंग के झोली फाफर ना होखे।

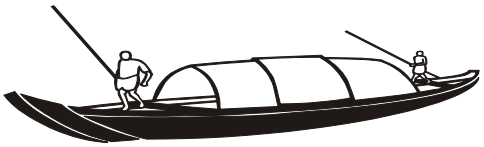

बुरा मत कहीं

बुरा मत देखीं

बुरा मत सुनी

गाँधी जी के चउथका बानर

मिर्जा खोंच

हमार बात यदि साँच नइखे बाकिर साँच के निकट से जरूरे गुजर रहल बा। इ बात रउआ माने के बा। बात साँच बा के गाँधी के पाले चार गो बानर रहे जे में तीन गों के विकलांग कहल जा सकेला। गाँधी जी जौन काम के बीड़ा उठावलें ओकरा पूरा कर देस। जइसे देस के आजादी के बीड़ा उठाइलें आ देस आजाद करा देलें। रउअे सोंची के जौन आदमी बिना इमली खीअइलें अंग्रेजन के दाँत खट्टा कर देस उ भला तीन गो विकलांग बन्दर के साथ कौन तीर मार लेतन। जब गांधी जी के कहल नइखे मानत लोग त उ विकलांग बानर के कहल भला लोगवा मानी? तीनों बानर के तीन पाठ बा – **बुरा मत कहीं, बुरा मत देखीं** आ **बुरा मत सुनी।** तीनों के इ कहला के कौनो असर लोगवा पर ना होखी। हाँ पुरनिया लोग ई बात के तनी मानत रहे लेकिन ओकर असर ठीक ना पड़ी। बस इहे लोगवा कहे के जब गाँधी जी के बात बाऽ त मानले तानी सन। आज के जुग **"जेकर लाठी औकर भैंस के जुग बा"** आ गाँधी जी कौनो बुड़बको ना रहनी। बहरी देस से पढ़ के भारत आइल रहनी। एही से लोगवा के मनावे खातिर चउथका बानर रखले रहनी आ गाँधी जी के समय परिवार नियोजन के कौनो हल्ला भी ना रहे। उ जेतना बानर चहतन राख सकत रहलन। उ तीन गो बानर से जे बात कहे के चाहत रहलन उ बात पूरा ना ही पावत रहे। एह लिए चउथका बानर के रहल जरूरी रहे। हो सकेला के अंग्रेज कूली षड्यंत्र रच के ओकर मडर करादेले होखियन सन चाहे किडनैप करा देले होखियन सन। काहे के चउथका तीनों बानर के निचोड़ रहे। आजादी के एक–दू साल बाद तक गाँधी जी अगर जिन्दा रहतन त जरूर ओकर खोज पूछ करतन। गाँधी जी राम राज के जवन सपना देखले रहलन चउथका के साथ जरूर पूरा करतन।

गाँधी जी अपना देसवासी के जे तीनों बानर से पाठ पढ़ईले का रउआ नइखे लउकत ओकरा में कौनो कमी बा? तीन टाँग के जानवर रउआ कहीं देखले बानी? रउआ नइखीं देखले के चार पहिया वाला गाड़ी। कम ढिमलाला आ तीन पहिया खूबे ढिमलाला। एही लिए तीनों बानर के ना रहला के नतीजा बा। चउथका बानर का कहत रहे जानत बानी? उ कहत रहे बुरा मत करीं। आ ओकरा हाथ में लाठी रहे। बात समझ में आइल? का चउथका बानर रहित तऽ जे कूली हो रहल बा उ कुली होखित? ना होखित।

जे कहदेनी से कहदेनी

मिर्जा खोंच

का करली हो कौनो साला, जे कहदेनी से कहदेनी।
हम घरवाली के घरवाला, जे कहदेनी से कहदेनी।।

मुन्ना के महतारी सुन लऽ, हमरो पाले तऽ इज्जत बा।
अब बन करला मुँह पर ताला, जे कहदेनी से कहदेनी।।

हिन्दी भासा के रक्षक हईं, हम शिक्षक औरी समीक्षक हईं।
हऽ छाली के पूलिंग छाला, जे कहदेनी से कहदेनी।।

मत बन ठन के एतना निकलऽ, ना तऽ जे होखी तू जनिहऽ
तलवार चऽली आ चऽली भाला, जे कहदेनी से कहदेनी।।

जे कहदेनी स कहदेनी, कब आगा, पाछा देखेनी।
पहिनावऽ मिरजा के माला, जे कहदेनी से कहेदनी।।

– भोजपुरी माटी –

मई 2008 से साभार

व्यंग्य

चरन पादुका

मिर्जा खोंच

इ सोच के भय लागेला कि जूता, चप्पल आ खड़ाऊँ ना रहित त अपना गोड़ के कौन दसा होखित। चरन पादुका में सबसे पहिलका स्थान खड़ाऊँ के होखेला। एकर इतिहास बड़ा पुरान बा। इ राजगद्दी पर बइठ के चउदह बरिस ले शासन कइले बा। रउआ नइखे मालूम त रामायण पढ़ी चाहे टी॰ वी॰ में रामायण सीरियल देखीं। खड़ाऊँ बनावे में आसानी बा। पैर के तलवा के नाप ले लीं। ओकरे बराबर लकड़ी काट लीं। पंजा में फंसावे खातिर रस्सी लगा दीं आ अँगूठा में फंसावे खातिर रस्सी लगा दीं। राउर खड़ाऊँ तैयार हो गइल। जहवाँ चाहीं खटर-पटर करत चल जाई। ना हींग लागल ना फिटकरी। मंदिर में जेने चाहीं उतार के पूजा कर लीं, केहू ना ले जाई।

जूता पहिनलो जाला आ जहाँ जरूरत पड़े तऽ चलावलो जाला। मुहावरा के दुनिया में जूता बड़ा नाम कइले बा। जइसे जूता में दाल दरल, चानी के जूता चलल इत्यादि। जूता में सबसे बलवान होला बूट। जे साहेब लोग पहिनेला। कौनो लइका के शादी में लाल जूता काहे पहिनावल जाला। लाल रंग खतरा के निशानी ह। इहे बात हम एक जने से पूछनी। त ऊ कहलें कि बेटा तोहरा समझ में ई ना आई। जब तोहार बियाह हो जाई त पता लागी। साँचो, बियाह के बाद ई बात हमरा बिना पूछले समझ में आ गइल। जूता हरदम ना पहिनल जाला कि बेर-बेर फीता खोली आ बाँधी। एही से घर में चप्पल पहिनल जाला। चप्पल के साथ कौनो खास पहिनावा के जरूरत नइखे। पैंट पर पहिनी, पैजामा पर पहिनी, धोती पर पहिनी रउआ केहू ना टोकी। हमरा विचार से चप्पल के आविस्कार कौनो कोमल हिरदय वाला आदमी कइले होई। चप्पल के अगर ध्यान से देखीं त हर तरे ऊ स्त्रीलिंग लउकी। काहे कि ऊ हल्लुक होखेले, रंगीन होखेले। एकरे चेहरा अइसन बुझाला जइसे केहू मेहरारू अँचरा में मुँह छुपइले बिया। हमार समाज मरद परधान समाज ह। एह से चप्पल औरते ना मरदो पहिनेला। चप्पल में एगो अउरी बात बा। ऊ एकतरफा प्यार ना सहे। चप्पल देखावे के दूगो मतलब होला। एगो मतलब होला कि हद से बढ़ल त समझ ल। आ दूसर मतलब होला कि चप्पल के परयोग जहाँ चाहीं उहाँ करीं। हमार एगो साहित्यिक मित्र ओकरा के साहित्य के हवाई चप्पल कहे ले जे साहित्य के हर विद्या में आपन टाँग फंसावेला।

कबो-कबो जूता आ चप्पल के जरूरत पूरा करे खातिर लोगवा फाटल पुरान जूता पहिन के मंदिर में आ मस्जिद में जाला आ नीमन आ नया ले आवेला। उनकर मनोकामना पूरा हो जाला। एही से जब पूजा करे जाईं त खाली पैर जाईं आ भरती पैर आईं। पकड़ा गइला पर दाँत बिदोर के कहीं कि मजाक नू कइले रहीं देखीं का होखता। चरन पादुका अब जीवन के एगो बुनियादी जरूरत बन गइल बा। चप्पल पर जब मरद के कब्जा हो गइल त ओकरा पर हाई हील के सेंडिल आ गइल बा। ई मरद लोगन के सही जवाब बा। असली मरद बाड़ त सेंडिल पर कब्जा करके देखाव। किरपा कर के हमरा लिए एक जोड़ा जूता के इंतजाम कर दी। पिछलका साल कवि-सम्मेलन में जवन जूता हमरा मिलल रहे अबकी साल के कवि-सम्मेलन में गायब हो गइल बा। उहे जूता के जुदाई में हम ई कुल्ही लिखनी हँ जब कौनो चीज कुछ दिन पाले रह जाला त ओकर महत्व समझ में आवेला। आ आजकाल जे भी बिना जूता के मंदिर, मस्जिद में जाता ओकरा पर खास ध्यान रहेला। अब ऊँहा मौका ना मिले। काहे कि सारा लोग होशियार हो गइल बा।

का करतीं

मिर्जा खोंच

सिर बचइतीं ना हम तऽ का करतीं।
भाग जइती ना हम तऽ का करतीं।।
जब खबर मिल गइल के छापा बा।
धन लूकइती ना हम तऽ का करती।।
अपना नेता के रहनी चपरासी।
दनदइती ना हम तऽ का करतीं।।
मार मँहगाई के पड़ल इतना।
घूँस खइती ना हम तऽ का करतीं।।
रहले पत्नी के भाई निसपेक्टर।
धउंस खइती ना हम तऽ का करती।।
घर से बेमेल नौकरानी के।
जे भगइतीं ना हम तऽ का करतीं।।
नैन के तीर जब चलल **"मिर्जा"**।
घट छटपटइतीं ना हम तऽ का करतीं।।

मिर्जा खोंच : हास्य व्यंग्य के "रसायनिक अवतार"

सुरेश गुप्त

मिर्जा खोंच नाम हऽ एगो एइसन कमलकार के जे हँसे हसावे आ व्यंग्य के तीर छोड़े के **"सिम्बल"** बन गइल बा। रउआ सभन इ जानऽ तानी कि हास्य के सम्बन्ध हृदय से आ व्यंग्य के सम्बन्ध बुद्धि से होला इहे हास्य व्यंग्य के रसायनिक अवतार बनाके भगवानजी एगो अदमी के इ धरती पर भेजलन जे आजू हमनी के बीच मिर्जा खोंच के रूप में बाड़न। बिहार राज्य के प॰ चम्पारण के बेतिया (जिला हेड क्वार्टर) शहर के नया टोला में रहे वाला आ वित्तरहित गुलाब मेमोरियल कॉलेज में कार्यालय लिपिक के पद पर काम करे वाला **'सीरियर सिटीजन'** मिर्जा खोंच बात बात में, हँसी हँसी में अइसन बात कह जालन कि लोग ओकरा बारे में सोचले भी ना रहेला। उनकर हास्य व्यंग्य बीमार खतिरा कुनैन के गोली होला। कडुवा तऽ लागे ला बाकिर बोखार ठीको हो जाला।

फक्कड़, अलमस्त जिनगी जिए वाला मिर्जा खोंच के लगे धन-सम्पत्ति के नाम पर हिन्दुस्तान के कोना-कोना से आइल पत्र-पत्रिका आ उनकर लिखल रचना के अम्बार बाटे। गद्य आ पद्य दूनू में समान रूप से रचना में छोट-से-छोट विषय आ बड़ से बड़ मामला के रंग रंगीला संसार बसा के खोंच साहेब साँचों में धनी आदमी बाडे। ***'हर फिक्र' को धुएँ में उड़ाता चला गया*** के दरसन में विश्वास करे वाला मिर्जा साहेब के खासियत हऽ कि उ कबहूँ भूतकाल के चिन्ता ना कइलन। भविष्य से चिन्तित ना भइलन आ वर्त्तमान के पूरा फायदा उठवलन। खोंच साहब में कुछ खास बात अइसन बा कि हर अदमी उहाँ खातिर मन में आदर भाव रखेला।

समय पालन एमे सबसे पहिले बा। कवनो काजकारज में समय पर पहुँचल उहाँ के आदत बा। कार्यक्रम अगर पाँच बजे बा तऽ उनका खतिरा पाँच के मतलब पाँच होलां, साढ़े पाँच ना। दूसरका बात कि अपना से जूनियर कलमकार के उत्साह बढ़ावल उनका नीमन लागे ला। नया लिख निहार के रचना पत्र पत्रिका में भेजे खातिर प्रोत्साहित करत रहेलन। तीसरकी बात कि संबंध निभावे के बात केहू खोंच साहेब से सीखे। बीमार रहला के बादो इतवार के रेक्सा से घूम घूम के आपन जान पहचान वालन के हालचाल पूछल उनका खास कार्यक्रम हवे। एक हाथ में छड़ी लेके खोंच साहेब जब पहुँचेलन त बुझाला कि केहू गार्जियन हमनी के सामने बा।

हमरा खातिर तऽ खोंच साहब खास आदर आ सम्मान के हकदार बाडन काहे कि हम आजू जब दू चार अच्छर लिखत पढ़त बानी ओह में उनकर बतावल ऊर्दू के खास जगह बाटे। भगवान करस कि खोंच साहब शतायु होखस। चली खोंच के चटकार रचना के कुछ हिस्सा के आनन्द उठावल जाव -

[1] उनकर जेबी हरे के सीख ऽ
मार के जल्दी टरे के सीख ऽ
परतिष्ठा से जिए खतिरा
मेहरारू से डरे के सीख ऽ

[2] पीर आपन प्रीत पराई
हमरा से ना होखी भाई
नैन के तीर भइल बा भोथर
लाग ऽ ता टिटनस हो जाई।

[3] किस्मत में बाटे होला आई हो दादा
बेटवा निकल बकलोल आई हो दादा
दिनभर इलू इलू गाएब, तोहरा का?
रात में उठ के फ़्यूज उडाइब, तोहरा का?
महमारी बपसी के पीछे रख के हम
मेहरारू के गोड दबाएब, तोहरा का?
इतने में इतराइल बा -
सम्मेलन में पढ़ के आइल बा।

गैसलाल चौक, बेतिया
प0 चम्पारण (बिहार)

निहोरा

"भोजपुरी जिनिगी" भोजपुरी भाषा के त्रैमासिक पत्रिका ह जेकर प्रमुख उद्देश्य भोजपुरी भाषा के प्रचार आ प्रचार करल बा। भोजपुरी साहित्य के समृद्ध करे खातिर रचनाकार भाई-बहन, नेही-छोही, विद्वान, गुरुजन, विचारक, संस्था संचालक, आंदोलनकर्ता लोगन से निहोरा बा कि आपन सक्रिय साहित्यिक सहयोग करीं।

"भोजपुरी जिनिगी" खातिर मौलिक कहानी, कथा, कविता, लेख, निबंध, ललित निबंध, व्यंग आलेख, हास्य व्यंग, संस्मरण आदि भेज के इ महान उद्देश्य के पूरा करे में सार्थक योगदान दीहीं। आपन अंचल के भोजपुरी के चर्चित, अचर्चित बाकिर समर्पित रचनाकार के साहित्य साधना पर आधारित लेख आ उनकर बातचीत [साक्षात्कार] भेज सकीला। महत्वपूर्ण साहित्यिक काजकरम के रिपोर्ट भी प्रकाशन खातिर भेंजी। आपन प्रतिक्रिया आ बहुमूल्य सुझाव से अवगत करायीं।

संसाधन के सीमित होला के चलते हम अभी रचनाकार बंधुलोगन के पारिश्रमिक देने के स्थिति में नइखी। बाकिर राउर सहयोग मिली पूरा विश्वास बा।

संपादक

साक्षात्कार

इहे कहल जाई

सह-संपादक : दिलीप कुमार

भोजपुरी हास्य-व्यंग्य विद्या के लोकप्रिय कवि मिर्जा खोंच से **"भोजपुरी जिंदगी"** के सह-संपादक आ युवा साहित्यकार **'दिलीप कुमार'** से कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुअन पर लमहर बातचीत भइल। प्रस्तुत बा ओह बातचीत के मुख्यांश -

भो॰ जि॰ : रउआ भोजपुरी हास्य-व्यंग्य विद्या के लोकप्रिय कवि मानल जाइले। रउआ एह लोकप्रियता के का वजह बा?

मि॰ खोंच : ई हमरा पता नइखें। हम त आपन साहित्य साधना कहीके। एकर सही मूल्यांकन के जिम्मेवारी पाठक आ श्रोता के बा।

भो॰ जि॰ : भोजपुरी हास्य व्यंग्य में अ बहीं कवना-कवना तरह के रचना प्रकाश में आ रहल बाड़े सन?

मि॰ खोंच : अबहीं एह विद्या में हर तरह के रचना सोझा आ रहल बाड़े सन। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सम-सामाजिक मुद्दन पर व्यंग्यकार लोग सजग होके अपना लेखनी के धार के बढ़ा रहल बाड़े।

भो॰ जि॰ : भोजपुरी के अलावे रउआ अउरी कवना-कवना भाषा में रचना करीले?

मि॰ खोंच : भोजपुरी के अलावे हिन्दी आ उर्दू में भी हम समभाव से रचना करत आ रहल बानीं। भोजपुरी में हमार पहिल रचना **"लटर-लअर"** [साप्ताहिक अखबार] में छपल रहे। रचनाकाल इयाद नइखे।

भो॰ जि॰ : मजाके-मजाक में पाठक भा दर्शक के सोझा समाज के कवनो समस्या के सहज उद्घाटन क दिहल कवनो हँसी-खेल के बात ना ह। एमें कबो-कबो रचनाकार के हानियो उठावे के परेला। रउआ एइसन महसूस करीके?

मि॰ खोंच : बात त सभ बिलकुल सही बा, बाकिर हम एकर कवनो परवार ना करीं। लेखनी के ताकत गोली-बनू के ताकत से कहीं आडे बरियार आ प्रभावशाली होला। एकरा वाण दिल-दिमाग पर सीधे प्रहार होले अपना प्रभाव दीर्घकालीन आ सादे कारगर होला। ई बिना कवनो खून के धारा बहवले बह-बह क्रांति के जनक हो जाला आ अपना उद्देश्य में पूरा सफलो होला। हम सिर्फ आपन काम करीले। पाठक आ दर्शक के सोझा समाज के आइना देखावल हम आपन धरम समझिले भेष उन्हनी लोगन पर छोड दीहिले।

भो॰ जि॰ : कुछ लोग हास्य-व्यंग्य के रचना के मनलगाऊ आ भीड़ जुटावेवाला रचना के सिवाय कुछ ना मानस। रउआ एह से कहवाँ ले सहमत बानीं?

मि॰ खोंच : हम एह से बिल्कुल सहमत नइखीं। काहे कि हास्य-व्यंग्य के रचना एगो अइसन तीर ह जवन सीधे हृदया पर वार करेले आ केहू के बिना कवनो नुकसान पहुँचवले आपन काम पूरा के लेले। जहाँ तक मनलगाऊ आ भीड जुटाऊ कविता के बात बा त ई त एह विद्या के गुण के विशेषता ह ऽ जवना कारन पाठक भा श्रोता खुद-ब-खुद खींचा के ओकरा प्रभाव के घेरा में चलि आवेले। हास्य-व्यंग्य के रचना के सबसे बड़ विशेषता ह एकर सहज अभिव्यक्ति अपना एही सहजता के गुण के कारन ई काव्य के लोकप्रिय विद्या के रूप में जानल जाला।

भो॰ जि॰ : वर्तमान समय में समूची दुनिया गाँव अस हो रहल बिआ। भोजपुरी के एह विद्या हास्य-व्यंग्य पर का प्रभाव पड रहल बा?

मि॰ खोंच : भूमण्लीकरण आ वैश्विकरण के एह

दौर में ई सही बा कि पूरा विश्व सिमट के गाँव के रूप में हो गइल बा। एह बेरा हास्य-व्यंग्य लोग के जिम्मेवारी पहिले के अपेना जादे बढ़ गइल बा। अब ओह लोगन के स्थानीय आ क्षेत्रीय समस्या से ऊपर उठ के सोंचे आ समझे के जरूरत बा। रचना आ रचनाकार लोग खातिर ई एगो नीमन संकेत बा कि जे पहिले स्थानीय स्तर पर जानल जात रहे अब संचार आ आवागमन के सुविधा के प्रभाव के कारन उनकर प्रसार दूर-दूर तक संभव हो सकी।

भो॰ जि॰ : अबहीं नारी विमर्श, दलित विमर्श आदि के लेके खूब चर्चा हो रहल बा। भोजपुरी हास्य-व्यंग्य में एह पर का कुछ लिखा रहल बा?

मि॰ खोंच : साहित्य समाज के दरपन होला। ई समाज में घट रहल हर एक समस्या के ओर पाठक आ श्रोता लोगन के ध्यान दिलावे के प्रयास करेला। जवना साहित्य में समाज के आइना प्रस्तुत करे के ई क्षमता ना होखे ऊ साहित्य निरर्थक मानल जाला। भोजपुरी के एह लोकप्रिय विद्या में एक विद्याा में पुरजोर प्रयास हो रहल बा। समाज में चाहे ऊ नारी समस्या होखे, दलित समस्या होखे आ कवनो समस्या एह विद्या में हँसते-हँसते ओकरा तरफ लोगन के ईभास हो जाला। भोजपुरी हास्य-व्यंग्यकार समाज के अइसना हर ज्वलंत समस्या पर आपन ध्यान केंद्रित करत सजग हो रहल बाड़े। साथ ही देश के भीतर आ बाहर कई तरह के अइसन समस्या तेजी से आपन सर उठा रहल जाहीं सन् एह सभ समस्यन में नक्सलवाद, आंतकवाद आदि मुद्दा काफी ज्वलंत बा। देश के बाहरी मोर्चा पर घुसपैठियन के जवन चाल-ढाल बा, केहू से छिनल नइखे। भोजपुरी हास्य-व्यंग्यकार एकरो तरफ अब आपन ध्यान बँटा रहल बाड़न।

भो॰ जि॰ : भोजपुरी में हास्य-व्यंग्य के विद्या के अउरी पोढ़ बनावे खातिर रचनाकार लोगनि के कवना-कवना चीज पर जादे ध्यान देवे के चाहीं?

मि॰ खोंच : भोजपुरी के हास्य व्यंग्यकार लोग से हम इहे अपील करब कि जेतना अधिक से अधिक हो सके ऊ समाज में फइलल बुराई आ समस्या के ओर अपना लेखनी के केंद्रित करस। समता बाडी समाज के स्थापना खातिर ई जरूरी बा कि सुरक्षा निअन पाँव पसरले एह कुरीतिक पर खुल के प्रहार होखे के चाहीं। लोगन के सामन्ती सोंच में बदलाव के अइला के जरूरत बा आ एह में कवि आ साहित्यकार लोगन के भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो सकेला।

भो॰ जि॰ : रउआ नजर में चम्पारन के कुछ अइसन रचनाकार जे भोजपुरी हास्य-व्यंग्य विद्या के आगे बढ़ा रहल बाडे।

मि॰ खोंच : एह विद्या में स्थानीय स्तर पर चम्पारन में कुछेक रचनाकार नीमन प्रयास कर रहल बाडे जवना में अरूण चम्पारणी, गोरख प्रसाद मस्ताना आदि के नाव उल्लेखनीय बा।

भो॰ जि॰ : राउर व्यंग्य वर्तमान राजनीति पर केतना प्रभावशाली बा?

मि॰ खोंच : ई त हम ना कह सकीं। ई पाठक भा श्रोता के जिम्मेवारी ह। हमार काम साहित्य के जरीये समाज के सेवा कइल आ जमीनी स्तर पर जागरूकता के प्रसार कइल बा।

भो॰ जि॰ : आगे राउर का योजना बा?

मि॰ खोंच : निरंतर साहित्य साधना। साथे हम कहल चाहब -

उनका पाले जे धन हो गइल।
अउरी लूटे के मन हो गइल।।

★ ★ ★

हम हँसे तुम हँसो ये जमाना हँसे।
हँसते हँसते ये दम निकलता रहे।।

जौन रिलीफ में बाँटे आइल।
मिट्ठा चिउरा बा गुमसाइल।।
ओकरा मिलल मुफत के दारू।
पी के सरवा बा ढ़िमलाइल।।
पकड़ाइल चोरी के कविता।
चोर जी रहलें बड़ी ढ़िटाइल।।
सी. बी. आई. छापा मरलस।
निकल गइल सब घूंस के खाइल।।
लाग रहल बा टेटनस होखी।
नैन के तीन गइल भोतराइल।।
केकरा से हो आँख मटकका।
खिड़की वाली भाग पराइल।।
प्रेम के पाठ बा अइसन मिर्जा।
जेकरा याद बा उहे पिटाइल।।

व्यंग आलेख

घुसपैठिया

संतोष कुमार
सं॰ : भोजपुरी जिनिगी

'घुसपैठिया' खाली एक देश से दूसर देश में गैरकनूनी तरीका से ढुके वाला ना बलुक एक से दूसर भाषा में टंगरी फँसाये वाला लोग ह जे नियम,कायदा कनून तूर कतहूँ घुस जाले आनी कि इ टाइप के लोग कहीं भी घुसी, चाहे उ कवनो देश होखे भा भाषा उहाँ कवनो ना कवनो हानिये पहुँचाये के काम करेला लोग।

राजनीति, कायदा कानून, देश के नियम भा व्यवस्था हमरा समझ ना आवे लेकिन जवन हम समझ सकनी ह उ बड़ा रोचक बा। बात बा भोजपुरी भाषा में घुसपैठ करे वालान के। भारत में कई गो विद्वान, साहित्यकार, कवि, आदि बाड़न जे हिन्दी के धुरंधर मानल जाले साँच कहीं त हिन्दी आजकल इहन के जागीर बा आ इहाँ लोगन जवन कह देम, बक देम, थूक देम, चिल्ला देम, बकबका देनी उहो हिन्दी के शास्त्र बन जाला। बाकिर इ लोग हिन्दी के ठीकदार ह। काल्हु तक इ लोग भोजपुरी भाषा से अइसन भागस जइसे कुकुर के पोंछ पर माटी के तेल डालला पर भागेला एह में इ महान लोगन के कवनो दोष नइखे काहे से कि इह लोग के पता ना रहे कि भोजपुरी आजू अइसन तरह से स्थापित हो रहल बिया कि रोटी आ बाजार के भाषा बने में देर नइखे। हिन्दी के झाल बजावत-बजावत उमर सिरा गइल, भोजपुरी जिनगी भर अछूत रहल बाकिर भोजपुरी के हवा, पानी बदलल देख इ लोग समझ गइल कि बयार कुछ अउर बा। नतीजन इ, 'सोकल्ड विद्वान लोग' अलग-अलग मंच से आपन रोवन, पीटन, रोवा रोहट शुरू कइल। केहू कहल कि **'हमहूँ भोजपुरिये हई'** केहू कहल **'हमरो जनम ओनही भइल बा'**, केहू कहता कि **'हमरा फुफुहर, मौसिहर, चचहर, ननिहर, चाचा के ससुरारी, दीदीया के बियाह ओनही बा।'** केहू कहले कि **'हमरा दुख बा कि जिनगी भर हम भोजपुरिये बोलत त रहनी, बाकिर भोजपुरी के कुछू लिख ना सकनी'** केहू अपना चेला के भोजपुरी लिखे के प्रेरणा देता आदि आदि। एक जाना कहले कि भोजपुरी हमरा रग-रग में समाइल बा लेकिन बोले आवते नइखे, आवतो बा त सरम लागता। एक जना विद्वान कहले कि हम अस्सी साल के होला के बावजूदो भोजपुरी सुनेली अब लिखेके कोशिश करत बानी। कुछ एमे के विद्वान बाड़े जे महाचतुर निकल गइलन। कुछ महाविद्वान त अइसन होशियार निकलन कि उ सोचलन कि अब बुढउ लोग हिन्दी के सेवा करत फ्री में जिनगी गवाँ देलन, काहे ना हमहीं कुछ कर ली। चट से आपन हिन्दी काव्य संग्रह के भोजपुरी अनुवाद करा देलन। सरकारी पद के फायदा उठा के फटाफट तीन चार गो किताबन के विमोचन करा लेलन आ प्रोग्राम सरकारी खर्चे पर हो गइल। काहे से भोजपुरी के बढ़ावा देवे ला प्रोग्राम के नाम पर सब कुछ हो जाला। एह तरह से उ विद्वान भोजपुरी के युग पुरुष में सामिल हो गइले। हिन्दी से भोजपुरी अनुवाद कइल बड़ा आसान लागल बाकिर नोकसान भइल भोजपुरिये के। अनुवाद में भोजपुरी के जवन उहाँ के गरदन दबवनी के पूछीं मत, भोजपुरी के प्राण आ आत्मा हवे में टँगा गइल एगो घुसपैठिया के काम आउर निमन बा। उनका नजर में भोजपुरी के कवि लोग 1900 ई॰ के मॉडल के कविता गीत लिखत बाडे,अब काहे ना कुछु बदलाव लावल जाए। लोकरस के निरस, लोकरंग के बदरंग आ लोकभाषा के नटयी दबावते भोजपुरी में नयी धारा के कविता के सुत्रपात भइल। इहे भोजपुरी के नवगीत, नई कविता कहलायी खैर भला हो उ महाकवि, महाविद्वान के। अइसन हवा दिल्ली में बड़ा तेज बहत बा। कहलो बा कि **"बड़का जोगी रहले त कहाँ नू उनका जट्टा रहे।"** हिन्दी से भोजपुरी में पहिले घुसकुनिया काट के साहित्यकार लोग आवे अब त घुड़दौड़ भइल बा कि कइसे आ केतना जल्द भोजपुरी के उपन्यासकार,इतिहासकार, समीक्षक, निबंधकार, व्यंगकार, व्याकरण लेखक, शब्दकोष निर्माता,अनुवादक आदि बने के होड़ लागल बा।

हाल में दिल्ली में एगो भोजपुरी कवि सम्मेलन भइल। बड़ा परचार भइल रहे। बड़का हॉले, बड़हन मंच, भीड़ भी खुब रहे बाकिर कविता पढ़े सारा हिन्दी वाला लोग रहन जे आपन आपन हिन्दी के कविता भोजपुरीकरण करके सुनवले। आयोजक के सेटिंग के एगो कवयित्री जे पैदाइश दिल्ली के रहली उहो कविता पढ़ते समय भोजपुरी अनुवाद पढ़ली। बड़ा मुश्किल से एगो कविता पढ़ली उहो नयी धारा के रहे जेकरा उहे पढली उहे समझली। एही तरह एगो हिन्दी के समीक्षक उहाँ बठल रहलन जे कभी भोजपुरी के पँजरा कबो गइले ना उ छउक-छउक के भोजपुरी नयी धारा के कविता के खुब सरहले आ कहले कि आजू से भोजपुरी के भला होखल शुरू हो गइल बा।

अब राउरे सोचेके बा कि इ घुसपैठिया कब भोजपुरी के इतिहास पुरुष बनल जहियें।

पृष्ठ 14 के शेषांश ...

व्यंग आलेख

नथुनियाँ पर गोली मारे...

डॉ॰ गोरख प्रसाद "मस्ताना"

गोली मारल एगो अइसन शब्द बा जवना के अर्थ हरमेसे उल्टा लिहल जाला – नाम सुनते रोआँ खड़ा हो जाला आ करेजा काँप जाला बाकिर इहे गोली जब नथुनियाँ पर मारल जाला तऽ पूछीं मत एह में जवन परेम झलकेला भा जवन परेम झरेला ओकर बखान त कइल बड़ा पहाड़ बा। पहाड़ एह माने में कि अर्जुने एगो भइलन जे नाचत मछरी के आँख में तीर मरलें। बाकिर साँच बा कि अगर उ आजू रहते आ झूलत झूलनी पर गोली मारे के होइत त जरूर फेलिया जइते काहें कि झूलनी के संगे जवन भाव आ भंगिमा होला ओकरा समझल कठिने ना महा कठिन होला। जब काली दास पाई पेर दिहले त केसरिया दास लोगन के, के पूछत बा? आजू काल्ह देखीं त पत्र पत्रिकन में झुलनिया वाली लोग के राज लउकी। ओह में सरस्वती त कमे बाकिर लक्ष्मी जी लोग जादे बा। ओह में सरस्वती त कमे बाकिर लक्ष्मी जी लोग जादे बा। जेकर सवारीए उल्लू हऽ। जेकरा जेकराा पर एह लोगन के किरपा होला ओकरा उल्लू बन हीं के बा। झुलनियाँ वाली, के राज कहाँ नइखे। राजनीति से लिहले साहित्य तक, फिलिम से लिहले टी. वी. तक। पहिले क्रिकेट के कमन्टेटर मरदने लोग होत रहे अब तऽ उहवों झुलनियाँ वाली के राज भइल जाता। साबुन से लिहके सरफ तक त खेपात रहे, जबसे स्कूटर से कार तक इ लोग छाप लिहल, जवन नाहिंयों बिकात रहे उ ब्लैको में नइखे मिलत। अब एह भैलु पर केहू नथुनियाँ पर गोली मारे जाई त कइसे जे ओकर फिकिर कईल जाय। जब से सीमा पर गोली चलावे ला एह लोगिन के बहाली के चर्चा भईल आ सेना में बहाली शुरू भईल। झुलती सुरक्षित हो गईल केकर मजाल बा जे झुलनी पर गोली चला देवे। हँ एह सब चरचा में ऐगो साँच जरूर बा कि अउरी केहू झुलनी पर गोली चला पावे भा ना सईया जी के गोली त चलिए जाला। आ झुलनियाँ वाली हँसी हँसी के झेल जाली। एकरे नाम प्रेम हऽ। जवन ढाई ऑखर के होके भी अढ़ाई लाख के काम करेला। जे हमरा बात से सहमत होई उहे झलुनी आ प्रेम के संबंध बुझी त रउओ बुझीं आ बुझके झुलनी पर कुर्बान होई भले केहू देश पर कुर्बान होखता, होखे दीं। रउआ झुलनी प शहीद हो जाई। बुझनी नूँ।

हास्य व्यंग्य

मिर्जा खोंच

बन गइनी हम सउँसे फतूरी

बन गइनी हम सउँसे फतूरी।
उल्टा सीधा आपन काम।।
रात रात भर टी॰ वी॰ देखीं।
दिन के होखेला आराम।। **बन गइनी हम सउँसे फतूरी!**

हम तऽ बहुत बहादुर बानी।
काम गजब के कऽरी ले।।
कुततन के दउड़ा के मारी।
बस चूहन से ड़री ले।।
बन गइनी हम सउँसे फतूरी!
घबड़ाईले पढ़ला से हम।
बाकिर जाइले इस्कूल।।
गुरु जी के झाँपड़ के डर से।
सउँसे पाठ जाइले भूल।।
बन गइनी हम सउँसे फतूरी!

बपसी रोज हमरा के ठोकस।
देस महतारी खाए के।।
कोना में जाके छुप जाईं।
केतनो कहस नहाए के।।
बन गइनी हम सउँसे फतूरी!
बड़कन के बा आसिरवाद।
छोटकन के बाटे परनाम।।
अइसन नीमन काम करीं तऽ।
छप जाई अखबार में नाम।।
बन गइनी हम सउँसे फतूरी!

सदस्य फार्म

घर बैठे "भोजपुरी जिंदगी" के सदस्य बनें

सहयोग राशि –
वार्षिक (4 अंक) – 100/– रु॰ मात्र

महोदय,

मैं **"भोजपुरी जिंदगी"** का वार्षिक सदस्य बनने का इच्छुक हूँ।

इसका सहयोग राशि रु॰ _____

चेक/ड्राफ्ट सं॰ _____ दिनांक _____

द्वारा/नगद जमा कर रहा / रहीं हूँ। मुझे निर्देशित पते पर निर्धारित अवधि तक नियमित रुप से **"भोजपुरी जिंदगी"** भेजी जाए।

नाम _____

पता _____

_____

सम्पर्क न॰ घर : _____ मोबाइल : _____

शीघ्र संपर्क करें

सम्पादक

भोजपुरी जिंदगी

आर जैड एच/940, जानकी द्वारिका निवास
प्रथम तल, राजनगर–2, पालम कॉलोनी
नई दिल्ली–110077
मोबाईल॰ : 09868152874
Email : bhojpurijinigi@gmail.com

इस फार्म की फोटो कॉपी भी भरकर भेजें।